مختصر في أحكام

الطهارة و الصلاة

وملحق مهم بما يجب على العبد معرفته

إعداد

الشيخ: يوسف بن عبد الله الأحمد

मुख्तसर मसायल

तहारत तथा सलात

अनुवादक
अताउर्रहमान अब्दुल्लाह सईदी

प्रकाशक
अल्-अहसा इस्लामिक सेंटर
होफूफ़ **P.O.Box2022**
अल्-अहसा **31982**
फ़ोन नः**03.5866672** फ़ेक्स नः **5874664**

सऊदी अ़रब

भूमिका अनुवादक

मेरे मुसलमान भाइयो ! अल्लाह तआ़ला हम सब को इस्लाम धर्म का ज्ञान दे तथा उस पर चलने की तौफ़ीक़ तथा दैवयोग दे ।

निःसंदेह सलात इस्लाम के आधार में से एक महत्वपूर्ण आधार है जो प्रत्यक मुसलमान महिला एवं पुरुष पर दिन एवं रात में पाँच समय अनिवार्य है,जिसका छोड़ देना कुफ़्र तथा नास्तिकता है । किसी भी स्तथी में सलात का छोड़ना जायज़ नहीं है ।

आप के सामने मौजूद पुस्तिका में संक्षिप्त रूप से तहारत तथा सलात (पवित्रता तथा नमाज़) के मसायल एवं आदेश बयान किये गये हैं ,यह पुस्तिका अरबी भाषा में लिखी गई है और लोगों को लाभ पुहुँचाने के लिये अहसा इस्लामिक सेंटर विभिन्न भाषाओं में इसका अनुवाद करके कई वर्ष से निशुलक बाँट रहा है,इस से पहले उरदू भाषा में मैंने अनुवाद किया था जिसे सेंटर ही से दो बार छापा जाचुका है ।

उरदू भाषा में जब यह पुस्तिका छप कर आई तो हमारे अनेक मित्रो ने कहा कि हिन्दी भाषा में इस विषय पर कोई मुनासिब किताब नहीं है अतः इसका अनुवाद सरल हिन्दी में भी होनी चाहिये प्रन्तु सरल शब्द का प्रयोग हो जिसे कम पढ़े लिखे लोग समझ सकें ।

इधर कई वर्षों से सेंटर में काम करने से नाना प्रकार के लोगों से मुलाकात होती रहती है जिस से मुझे भी महसूस हुवा कि बहुत से लोग नबीसल्लल्लाहुअलैहिवसलम कीसुन्नत के अनुसार सलात पढ़ना नहीं जानते हैं,साथ ही साथ बहुत से लोग नये नये मुसलमान भी हो रहे हैं जिन्हें हिन्दी भाषा में पाकी सफाई तथा सलात एवं नमाज की महत्व बातें सिखाना आवश्य है इसी कारण मैं ने सरल शबदों का प्रयोग करते हुये इसे हिन्दी भाषा में अनुवाद किया है जिसमें विशेष रूप से निम्न बातों का ध्यान दिया है ।

▶ जहाँ तक हो सका है मध्यवर्ग को ध्यान देते हुये असान तथा सरल शबदों तथा वाक्यों का प्रयोग किया गया है ।

▶ आवश्यकतानुसार कठिन शबदों के साथ उरदू शब्द का भी प्रयोग किया गया है ।

▶ दुआ़ओं को हिन्दी भाषा में भी लिखा गया है तथा उसका अनुवाद भी कर दिया गया है ।

▶ पूरी किताब में इस्लामी परिभाषाओं का अनुवाद नहीं किया गया है अतः नमाज़ की जगह सलात तथा सलात के सम्स्त परिभाषाओं को वैसे ही लिख दिया गया है जैसा शरीअ़त में उसका नाम है ।

निवेदन : मुझे यह कहने में कोई लाज नहीं कि मैं मात्र एक विधार्थी हूँ हिन्दी भाषा का ज्ञान बहुत कम रखता हूँ मात्र लोगों को लाभ पहुँचाने के लिये मैं ने यह प्रयास किया है इस लिये अगर किसी प्रकार की कमी आप को महसूस हो तो मुझे सावधान करें ताकि उसकी सुधार की जासके ।

अल्लाह तआ़ला से यह प्रार्थना है कि वह मेरे इस कार्य को स्वीकार करे और इसे मेरे माता पिता,भाई बहनों,मेरे समस्थ

अध्यापकों तथा मेरी संतान तथा परिवार के लिये सदेव बाकी रहने वाला दान बनाये आमीन ।

आपा का शुभेच्छुक
अताउर्रहमान अबदुल्लाह सईदी
अहसा इस्लामिका सेंटर होफूफ

प्राथमिकता

الحمد لله وحده والصلاة والسلام على محمد وعلى آله وصحبه وبعد :

में ने यह मुख्तसर एवं संक्षिप्त पुस्तिका पढ़ा जिसे हमारे भाई यूसुफ़ पुत्र अ़ब्दुल्लाह अल अहमद ने कम पढ़े लिखे लोगों तथा नये मुसलमानों की शिक्षा के लिये लिखा है । अतः मैं ने इसे राजेह तथा मशहूर क़ौल और आज्ञापालन के लायक़ फ़तवे के अनुसार पाया,तथा मैं इस आशा के सात दूसरे भाषाओं में अनुवाद तथा प्रकाशन की वसीयत करता हूँ कि अल्लाह तआ़ला इसके द्वारा अहले सुन्नत वलजमाअ़त में से उन मुसलमानों को लाभ पहुँचाये जिन के बारे में वह भलाई चाहता है और अल्लाह तआ़ला ही दैवयोग एवं तौफ़ीक़ देने वाला तथा सहायक है ।

अब्दुल्लाह पुत्र अब्दुर्रहमान अलजिबरीन
19-6-1420हिजरी

प्रारंभिका लेखक

الحمد لله والصلاة والسلام على نبينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين وبعد :

तहारत एवं सलात(पवित्रता तथा सलात) के धार्मिक आदेशों एवं फिक़्ही मसायल के विषय में यह मुख्तसर एवं संक्षिप्त पुस्तिका हमने इस्लामिक सेंटर अह़सा के आदरणीय भाइयों की माँग पर लिखा है ,अल्लाह पाक इन्हें हर भलाई की दैवयोग एवं तौफ़ीक़ दे । मै ने इसमें नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से साबित बातों को सरल तथा प्रतिष्ठा रूप एवं तरतीबवार इकट्ठा करने का प्रयास किया है ताकि विभिन्न भाषाओं में अनुवाद के लिये उचित रहे ।

तहारत(पवित्रता) के आदेश तथा अहकाम

सलात(नमाज़) इस्लाम के पाँच अर्कान तथा आधार में से एक अहम तथा महत्तव आधार एवं रुक्न है जो हर एक मरद तथा औरत पर अनिवार्य और वाजिब है तथा पाकी और पवित्रता सलात के सही होने के लिए शर्त है। अतः हम सब से पहले पाकी के अहकाम तथा आदेश बयान करें गें फिर सलात के अहकाम को बयान करें गें।

पानी की क़िस्में तथा भेद

1- पानी की दो क़िस्म हैं : (1) पाक,(पवित्र)

(2) नापाक. (अपवित्र)

2- केवल पाक तथा पवित्र पानी ही से वुज़ू और स्नान एवं ग़ुसुल कर सकते हैं नापाक तथा अपवित्र पानी से बिल्कुल जायज़ नहीं है ।

3- हर वह पानी जिसे पानी कहा जात हो तथा किसी निजासत एवं अपवित्रता के कारण बदला न हो तो वह

पाक पानी है । जैसे समुंद्रों,नहरों,कुओं तथा बारिश आदि का पानी ।

4- हर वह चीज़ जिसे पानी नहीं कहा जा सकता उस से वुज़ू ओर स्नान करना जायज़ नही है ,जैसे जुस तथा शोरबा आदि् ।

5- वह पानी जिसका मज़ा,रंग, बू,किसी निजासत एवं अपवित्रता के करण बदल जाये तो ऐसे पानी को नापाक और अपवित्र पानी कहते हैं । अपवित्रता जैसे पाखाना,पेशाब,खून तथा मुर्दों की लाश और शाव आदि है । अतः अगर पानी में इस प्रकार की कोई अपवित्रता पड़जाये और उस पानी का मज़ा या रंग या बू उस गन्दगी एवं अपवित्रता के कारण बदल जाये तो पानी नापाक तथा अपवित्र हो जाये गा । और अगर इन तीनों चीज़ों में से कोई भी चीज़ न बदले तो वह पानी पाक है ।

6- नालियों के पानी को अगर बार बार इस प्रकार साफ़ किया जाये यहाँ तक कि रंग, बू तथा मज़ा पर गन्दगी एवं अपवित्रता का कोई असर तथा प्रभाव बाक़ी न रहे तो पाक हो जाता है ।

7- पानी में असल तहारत एवं पवित्रता है जब तक नापाकी साबित न होजाये इस समान्य नियम तथा क़ाइदह कुल्लियह के कुछ उदाहरण निम्न लिखित प्रकार हैं।

- अगर किसी आदमी को पानी मिले तथा वह आदमी उस पानी के पाकी या नापाकी तथा पवित्रता एवं अपवित्रता के बारे में कुछ नहीं जानता है तो उस पानी की असल पाकीएवं पवित्रता है । वह उस से पाकी तथा पवित्रता प्राप्त कर सकता है।
- अगर कोई शोचालय में जाये तथा उसकी ज़मीन गीली हो और उसपर उसके कपड़े का कोई भाग लग जाये तो उस गीले भाग में असल पाकी है जब तक कि उस गीले भाग की अपवित्रता तथानापाकी रंग याम ज़ा या बू में से किसी से ज़ाहिर न हो जाये।

नापाकी तथा अपवित्रता दुर करना

अपवित्रता(गन्दगी) की तीन क़िस्म एवं भेद है :

1- सब से बड़ी गन्दगी एवं अपवित्रता

2-दरमियानी गन्दगी एवं अपवित्रता

3- हलकी गन्दग एवं अपवित्रता

- **सब से बड़ी गन्दगी एवं अपवित्रता :**

कुत्ते का बरतन में मुन्ह ड़ाल देना इस से बरतन को बड़ी गन्दगी लग जाये गी तथा बरतन उस समय तक पाक तथा पवित्र नहीं होगा जब तक उस में मौजूद पानी या दुसरी चीज़ उँड़ेल न दी जाये और फिर सात बार धोया जाये जिस में से पहली बार मिट्टी से हो।

दरमियानी गन्दगी एवं अपवित्रता :
जैसे पेशाब.पाखाना तथा खून आदि। यह सब गनदगी किसी भी दूर करने वाली चज़ि,जैसे पानी, मिट्टी, पिटरोल तथा अन्य साफ करने वाली चीज़ो से दूर होजायें गी क्यों कि असल मक़सद गन्दगी को दूर करना है ,और जब गन्दगी किसी भी प्रकार दूर होजाये तो वह स्थान पाक तथा पवित्र हो जाती है।

हलकी गन्दगी एवं अपवित्रता : यह दो चीज़ें हैं :

1- उस छोटे लड़के का पेशाब जिसकी खूराक केवल दूध या अधिकतर दूध है।

2- मज़ी (वह बारीक सुफेद लिजबिज पानी जो शहवत तथा काम वासना के कारण मर्द के लज्जित स्थान) (शरमगाह)से निकले।

यह दोनों चीजैं अगर कपड़े में लग जायें तो उसकी पाकी के लिए केवल पानी छिड़क देना काफी है धोना ज़रूरी नहीं ।

चेतावनी : अगर मज़ी निकली है तो लज्जित स्थान तथा दोनों खुसयों को धोना ज़रूरी है.फिर वुजू करे ,स्नान अनिवार्य तथा वाजिब नहीं ।

पेशाब तथा पाखाना के आदाब

1- शौचालय ,पाखाना घर में पाखाना तथा पेशाब के लिए जाने से पहले यह दुआ पढ़ना चाहिये :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ

बिसमिल्लाहि अल्लाहुम्मा इन्नी अऊजु बिका मिनलखुबुसि वलखबाइस

(ऐ अल्लाह ! मैं तरे द्वारा पुरुष तथा स्त्री जिन्नात और शैतान से पनाह एवं बचाव चाहता हूँ)और निकलते समय غُفْرَانَكَ **गुफ़रानका** कहना सुन्नत है ।

(अर्थः हे अल्लाह मैं क्षमादान तथा बखशिश चाहता हूँ)

2- पाखाना घर में दाखिल होते समय बायाँ पैर बढ़ाना तथा निकलते समय दाहना पैर बढ़ना सुन्नत है ।

3- पाखाना या पेशाब कर लेने के बाद पानी या मिट्टी से इसतिन्जा तथा सफाई करना ज़रूरी है । इसतिन्जा तो पानी से होगा प्रन्तु पत्थर,मिट्टी,काग़ज़ी रूमाल आदि से सफाई सही है हाँ मिट्टी वगैरह तीन बार से कम प्रयोग नहीं करना चाहिये तथा अगर तीन बार से अधिक प्रयोग करने की जरूरत हो तो ताक (तीन, पाँच,सात,नौ) ही करना चाहिय

4- हड़्ड़ी,भोजन या अनाज तथा पशुओं के गोबर या लीद वगैरह से इसतिन्जा तथा सफाई करना जायज़ नहीं है ।

5- इसतिन्जा चाहे पानी से हो या किसी और चीज़ से बायें हाथ से करें गे ।

6- पानी के होते हुऐ भी मिट्टी वगैरह से इसतिन्जा करना जायज़ है प्रन्तु पानी से करना अफज़ल और बेहतर है ।

मिसवाक तथा सुनने फितरत(स्वाभाविक)चीज़ैं।

मिसवाक हर समय करना सुन्नत है प्रन्तु निम्न हालतों तथा दिशों में मिसवाक करने पर ज़ोर दिया गया है !

1- वुज़ू के समय 2- सलात के समय 3- घर में दाख़िल होते समय 4-नीद से उठने के बाद 5-क़ुर्आन की तिलावत के समय ।

❁ बेहतर यह है कि मिसवाक पीलू की लकड़ी का हो, प्रन्तु अगर अन्य कोई दूसरी चीज़ है जैसे बुरुश , मन्जन आदि तो भी कोई बात नहीं ।

❁ **सुनने फितरत(स्वाभाविक चीज़ैं) पाँच हैं ।** अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया :पाँच चीज़े फितरत (स्वभाव)की है ,खतनह,नाभी के नेचे का बाल मूँड़ना,मोछैं काटना,नाखुन काटना तथा बग़ल के बाल उखाड़ना (सही बुखारी ,सही मुस्लिम)

❁ खतना पुरुषों पर अनिवार्य तथा वाजिब है और महिलाओं के लिये मुसतहब तथा उत्तम है ।

❁ नाभी के नीचे के बाल मूँड़ने,मोंछैं काटने, नाखुन काटने तथा बग़ल के बाल उखाड़ने में चालीस दिन से अधिक देर करना हराम तथा वर्जित है ।

वुज़ू का तरीका तथा विवरण

1- वुज़ू करने वाला सब से पहले بِسْمِ اللَّهِ बिस्मिल्लाह कहे ।

2- फिर अपनी दोनों हथेलियों को तीन बार धोये ।
3- फिर तीन बार कुल्ली करे तथा तीन तीन बार नाक में पानी चढ़ाये तथा उसे झाड़े और कुल्ली करते समय पानी को मुन्ह के भीतर हिलाना तथा घुमाना आवश्य है, इसी प्रकार नाक में पानी चढ़ाते समय नाक के भीतर साँस द्वारा पानी को खूब अच्छे प्रकार खींचना चाहिये, हाँ अगर सौम(रोज़ा,ब्रत) से हो तो इस प्रकार न करे ताकि पानी का कोई भाग भीतर न जाये और नाक झाड़ते समय साँस द्वारा पानी अपनी नाक से बाहर निकाले ।
नाक में पानी दाहने हाथ से चढ़ाये और बाऐं हाथ से झाड़े ।
4- कुल्ली तथा नाक में एक ही चुल्लू से पानी चढ़ाना सुन्नत है ,चुल्लू का आधा भाग कुल्ली के लिऐ तथा आधा नाक में चढ़ाने के लिऐ ,वैसे दोनों के लिऐ अलग अलग चुल्लू लेना भी सही है ।
5- फिर अपने चेहरे को तीन बार धोऐ,चेहरे का सीमा लम्बाई में सिर के बाल उगने के स्थान से लेकर ठोड़ी के निचले भाग तक है तथा चौड़ाई में कान से कान तक(कान चेहरे में दाखिल नहीं है)

6- अगर दाढ़ी घनी है तो उसमें ख़िलाल करना सुन्नत है । ख़िलाल का तरीका यह है कि पानी का एक चुल्लू ले कर दाढ़ी के बालों के भीतर उँगलियों द्वारा दाखिल करे ।

7- फिर अपने हाथ को उँगलियों के अन्तिम कनारे से ले कर कुहनियों समेत तीन तीन बार धोऐ(दोनों कुहनियों का धोना अनिवार्य तथा वाजिब है)पहले दाहिने हाथ को तीन बार फिर बाँयें हाथ को तीन बार ।

8-फिर अपने सिर तथा कान का केवल एक बार मसह करे ,सिर तथा कान के मसह का तरीका यह है कि अपनी दोनों हथेलियों को भिगो कर सिर के अगले भाग पर रखे,फिर दोनों हाथों को गुद्दी के अन्तिम भाग तक ले जाये फिर दोनों हाथों को उसी प्रकार सिर के अगले भाग तक वापस लाये,इसके बाद अपने दोनों कानों का मसह करे,कान के भीतर वाले भाग का शहादत(अंगूठे के बग़ल वाली) की उँगली से तथा बाहरी भाग का अंगुठे से,और कान के मसह के लिए नया पानी न ले ।

9- फिर अपने दोनों पैर(क़दम-पग) को उँगलियों के अन्ति भाग से टखना समेत तीन तीन बार धोऐ, दोनों

टखनों का धोना अनिवार्य तथा वाजिब है,पहले दाहिने पैर को फिर उसी प्रकार बायें पैर को ।

10- अगर वुज़ू के बाद मोज़े पहना हो तो उस पर मसह जायज़ है ,पहले दाहिने पैर के मोज़े के ऊपरी भाग पर एक बार मसह करे फिर इसी प्रकार बायें पैर ।

❁ निवासी (जो यात्रा पर न हो) एक दिन तथा एक रात और मुसाफिर (यात्री) तीन दिन तथा तीन रातें मोज़ों पर मसह कर सकता है ।

❁ मसह का तरीका यह है कि हाथ की उंगलिया पानी से भिगो कर पैर की उंगलियों से टखने तक केवल एक बार फेरे ।

❁ मसह का समय वुज़ू टूटने के बाद पहले मसह के समय से आरंभ होगा ।

उदाहरण स्वरूप किसी ने वुज़ू के बाद सुबह 8 बजे मोज़े पहना और उसका वुज़ू सुबह 10 बजे समाप्त हुवा तथा वुज़ू 1 बजे ज़ुहर के समय किया और मोज़े पर उसने मसह किया तो मसह करने के समय का आरंभ 1 बजे ज़ुहर से होगा दूसरे दिन उसके लिऐ 1 बजे ज़ुहर तक मोज़ह पर मसह करना जायज़ होगा ।

11-वुज़ू सही होने के लिऐ तरतीब(क्रम) शर्त तथा जरूरी है अतः अगर कोई आदमी सिर के मसह से पहले पैर धोले तो उसका वूज़ू सही नहीं होगा ।

12- इसी प्रकार वुज़ू सही होने के लिऐ अनुक्रमा(वुज़ू के अंग को लगातार एक के बाद दूसरा धोना) शर्त है इसी कारण ऐक अंग तथा दूसरे अंग के धोने के बीच लमबा समय(विराम)नहीं होना चाहिये ।

13-वुज़ू के प्रत्येक अंग को तीन तीन बार धोना अफ़ज़ल और उत्तम है तथा कोई अपने अंगों को दो दो बार या एक एक बार या किसी को तीन बार ,किसी को दो बार और किसी को एक बार धोये तो ऐसा भी जायज़ हे ।

14-वुज़ू के बाद वह दुआ पढ़ना सुन्नत है जो उमर पुत्र खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में से जो आदमी वुज़ू करता है तथा संपूर्ण वुज़ू करता है फिर यह दुआ पढ़ता है :- أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُه

अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुह-

अर्थ (मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं वह अकेला है उसका कोई भागीदार नहीं तथा मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्म(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)उसके दास्य तथा उसके संदेष्टा हैं)।
तो उसके लिए स्वर्ग तथा जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं जिस से चाहे वह प्रवेष करे गा ।(सही मुस्लिम)
इसी प्रकार यह भी पढ़ना उत्तम है जो अबूसईद खुद्री रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : जिसने वुज़ू किया फिर कहा : سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ

सुबहानका अल्लाहुम्मा व बिहमदिका, लाइलाहा इल्ला अन्ता असतग़फिरुका व अतूबु इलैक

(अर्थः ऐ अल्लाह मैं तेरी पवित्रता तथा प्रशंसा बयान करता हूँ,तेरे अतिरिकत कोई सत्य उपास्य नहीं,तुझ से क्षमा चाहता हूँ तथा तुझ से तोबह करता हूँ) तो ऐक दफतर में लिख कर उस पर मुहर लगा दिया जाता है जिसे केवल महाप्रलय के दिन खोला जाये गा ।(यह हदीस सही है ,हाकिम ने इसे सही कहा है तथा अल्लामह ज़हबी ने उनकी पुष्टि की है)

वुज़ू को भंग कर देने वाली चीज़ें

1- पाखाना पेशाब के मार्गों से निकलने वाली हर चीज़,पाखाना,हवा,मज़ी,वदी आदि ।

2- बुद्धि समाप्त होजाना चाहे गहरी नींद के कारण से हो या बेहोशी या नशा के कारण हो

3- बिना किसी बाधा या परदह के हाथ से शरमगाह (लज्जित स्थान)को छू लेना ।

4- ऊँट का मास खाना ।

नापाकी एवं अपवित्रता की किस्में और भेद

नापाकी (अपवित्रता) दो प्रकार होती है :

पहली क़िस्मः छोटी नापाकी : अगर वुज़ू को भंग करदेने वाले कामों में से कुछ भी काम आदमी ने कर लिया तो उसे छोटी नापाकी कहते है तथा बिना इस नापाकी को दूर किये हुये उसकी सलात सही नहीं होगी और यह नापाकी बिना वुज़ू के नहीं दूर हो सकती ।

ध्यान दें !अगर किसी को सदेव नापाकी लगी रहती है ऊदाहरणस्वरूप सलसलुल बौल(यह एक बीमारी है जिसमें मसाना की कमज़ोरी के कारण सदेव पेशाब टपकता रहता है) तो ऐसे आदमी को चाहिये कि सफाई प्राप्त करने के बाद पेशाब के स्थान पर रोई या कपड़ा

वग़ैरह रख ले ताकि नापाकी तथा अपवित्रता कपड़ों तक न पहुँचे फिर हर सलात के समय वुज़ू कर लिया करे । अतः वह अपने ज़ुहर के पहले समय के वुज़ू से ज़ुहर के साथ नफ़िलैं तथा छूटी हुई क़ज़ा सालतैं ज़ुहर का समय निकलने तक पढ़ सकता है । और ज़ुहर का समय निकलने के बाद वह बिना दोबारह वुज़ू किये अस्र की सालत नहीं पढ़ सकता ।

दूसरी क़िस्म : बड़ी नापाकी (अपवित्रता)बड़ी नापाकी निम्न चीज़ों से होगी ।तथा बड़ी नापाकी के बाद गुस्ल एवं स्नान वाजिब तथा अनिवार्य होगा।

1- मनी (वीर्य)का लज़्जत(काम वासना) के साथ उछल कर निकलना ।

2- हमबिस्तरी (सहभोग) करना चाहे मनी एवं वीर्य न निकले ।

3- इहतिलाम (स्वप्नदोष) नीद से जागने के बाद वीर्य की निशानी तथा असर अपने कपड़े या शरीर के किसी भाग पर महसूस करे ।जिस आदमी से ऊपर लिखे गये तीनों कामों मे से कोई ऐक काम हो जाये तो वह जुनुबी (बड़ा अपवित्र) माना जाये गा ।

4- हैज़ तथा निफास का निकलना । (मासिक धर्म तथा बच्चा पैदा होने के बाद जो खून आता है) ऐसे दिशा में खून का आना बन्द होने के बाद स्नान अनिवार्य होगा ।

❁ बिना स्नान बड़ी नापाकी समाप्त नहीं होगी ।

❁ जिसे छोटी या बड़ी नापाकी लग जाये उसके लिऐ बिना पर्दह कुर्आन मजीद छूना वर्जित तथा ह़राम है ।

❁ जुनुबी (वह आदमी जिसको बड़ी नापाकी लगी हो) के लिए कुर्आन पढ़ना जायज़ नहीं ।मासिक धर्म तथा निफास वाली महिला और वह आदमी जिसे छोटी नापाकी लगी हो उनके लिए कुर्आन मजीद पढ़ना इस शर्त के साथ जायज़ है कि वह कुर्आन मजीद को किसी बाधा या पर्दह के बिना न छुऐं हाँ अगर पर्दह के साथ छूते हैं तो कोई बात नहीं जैसे दसतानाह पहन कर कुर्आन मजीद उठाऐं या क़लम से पेज पलटैं आदि।

स्नान करने की विधि एवं तरीका

स्नान निय्यत से होगा,कुल्ली तथा नाक में पानी चढ़ाने के साथ पूरे शरीर पर पानी ड़ाल लेने से स्नान हो जाये गा प्रन्तु उत्तम विधि यह है :

1- बिस्मिल्लाह कहे ।

2- फिर दोनों हथेलियों को तीन बार धोये ।

3- फिर अपनी शरमगाह(लज्जित स्थान) को बाऐं हाथ से धोये ।

4- फिर अपने दोनों हाथों को साबुन वग़ैरह से पुनः मल कर धोये ।

5- फिर वुज़ू करे ।

6- फिर अपने सिर पर तीन बार पानी ड़ाले ।

7- उसके बाद अपने शरीर के दाहने ओर पानी ड़ाले फिर बायें ओर ।

8- अगर उसने वुज़ू के समय अपने पैरों को नहीं धोया है तो उन को धो ले ।

तयममुम

1-अगर पानी के प्रयोग करने की ताक़त न हो या पानी के प्रयोग करने पर किसी प्रकार का खतरह महसूस हो जैसे बीमारी,ऐसी सरदी कि बरदाश्त से बाहर हो,या मीठे पानी के समाप्त होजाने का खतरह हो तो ऐसी दिशा में स्नान तथा वुज़ू के बदले तयममुम करना जायज़ है ।

2- तयममुम का तरीका एवं विधि : अपनी दोनों हथेलियों को एक बार ज़मीन पर या मिट्टी के स्थान पर मारे फिर उन दोनों हाथों को अपने चिहरे पर फेरे

(मसह करे)फिर अपनी दोनों हथेलियों के ऊपरी भाग पर फेरे दाहने हथेली पर बायें हथेली के भीतरी भाग से फिर बाये हथेली पर दाहने हथेली के भीतरी भाग से।
ध्यान दें ! जिन कामों से वुज़ू भंग होता है उन कामों से तयममुम भी भंग हो जाये गा इसी प्रकार जैसे ही पानी प्रयोग करने की ताकत होजाये तो भी तयममुम भंग हो जायेगा।

हैज़(मासिक धर्म)

हैज़(मासिक धर्म): उस काले बदबू वाले खून को कहते हैं जो बालिग़ महिला की बच्चादानी से निकलता है(तथा निफास उस खून को कहते हैं जो बच्चा पैदा होने के बाद लगभग चालीस दिन तक निकलता है
❁ जब महिला हैज़ या निफास में हो तो उस पर निम्न लिखित काम हराम तथा वजिर्त हो जाते हैं।
1- सलात(नमाज़) पढ़ना(औरत इन दिनों की छूटी हुई सलात की कज़ा तथा पुर्णती नहीं करेगी)
2- सौम(रोज़ह)रखना(रमज़ान के महीने के छूटे रोज़ों की कज़ा औरत पर वाजिब तथा अनिवार्य है)
3-कअ़बा का तवाफ तथा परिक्रमा।

4-मस्जिद में ठेहरना ।
5- कुर्आना छूना (हैज़ तथा निफ़ास वाली महिला कुर्आन पढ़ सकती है तथा कुर्आन को परदा से जैसे दसतानाह आदि पहन कर छूना भी जायज़ है)
6- हमबिस्तरी तथा सहभोग ।

औरतों के शरीर से विशेष दिनों में निकलने वाले खून की किस्मैं :

पहला : हैज़ तथा निफ़ास ।(इसका बयान तथा कथन ऊपर बीत चुका है)

दूसरा : इसतिहाज़ह : वह खून जो औरत की लज्जित स्थान(शरमगाह) से किसी रग के फट जाने से निकलता है,यह ऐक स्त्री बीमारी है जों कुछ महिलाओ को हो जाती है जिसे लोग महीने की खराबी कहते हैं ।
वह महिला जिसे इस प्रकार का खून आऐ तो वह पाक तथा पवित्र महिला के प्रकार है अतः वह सौम तथा सलात(नमाज़,रोज़ह) करेगी हाँ उसे खून से बचना तथा खून का प्रभाव एवं असर खतम करना होगा तथा प्रत्येक सलात के लिये वुज़ू करे गी ।

तीसरा : जरदी(पीतुत) तथा मटमैला रंगः यह ऐक लिजबिज चीज़है जो कभी कभार महिला महसूस करती

है जो अधिक्तर पित् तथा गेहूँ के रंग का होता है अतः ऐसी दिशा में अगर हैज़ या हैज़ के अन्तिम दिन हों तो इसे हैज़ माने गी प्रन्तु जब पाकी तथा पवित्रता की दिशा में हो तो हैज़ नहीं है इसलिऐ औरत उसे साफ करके सलात के लिऐ वुज़ू करे गी ।

सलात के अहकाम (नमाज़ के आदेश)

❁ सलात इस्लाम के पाँच अर्कान(आधार)में से एक है । वह इस्लाम का सुतून तथा सतंभ है । सलात का छोड़ देना अल्लाह के धर्म में चोरी,ज़ना तथा व्यभिचार,दारू पीने से बड़ा अपराध है, बल्कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सलात छोड़ देने को कुफर एवं अधर्म कहा है जैसा कि बुरैदह रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : हमारे तथा उन के बीच सलात का अहद(प्रतिक्षा)है ,जिसने उसे छोड़ दिया उसने कुफ़र(सजातीय)किया (इसे सही सनद के साथ इमाम नसई,इबने माजह,तथा तिमिर्जी ने बयान किया है)

❁पाँच समय की सलात प्रत्येक मरद तथा औरत पर अनिवार्य और फर्ज़ है ।

फ़ज्र दो रकअ़त,ज़ुहर चार रकअ़त,अस्र चार रकअ़त,मग़्रिब तीन रकअ़त,इशा चार रकअ़त ।

❁ आदमियों पर समस्त सलात जमाअ़त के साथ मस्जिद में अदा करना अनिवार्य है ।

❁ माता पिता पर अनिवार्य है कि वे अपने पुत्रों तथा पुत्ररियों की सलात की अदाएगी पर तरबियत तथा पालनप्रशिक्षण करें, जब वह सात वर्ष के हो जायें तो उन्हें सलात पढ़ने का आदेश दें तथा सलात अदा करने का शौक़ दिलायें और उन्हें वुज़ू तथा सलात का तरीका और विधि सिखायें । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फर्माया है : अपनी अवलाद (संतान) को सलात का अदेश दो जब वे सात वर्ष के होजायें तथा इसके कारण उनको मारो जब वे दस वर्ष के होजायें और उनके बिस्तर अलग रखो ।(इसे इमाम अबू दाऊद ने बयान किया है)

सलात के सही होने की शरतैं तथा प्रतिबन्ध

1- हदस(अपवित्रता)से पाकी तथा पवित्रता प्राप्त करना

(छोटी अपवित्रता एवं नापाकी से पवित्रता और पाकी वुज़ू द्वारा तथा बड़ी अपवित्रता एवं नापाकी से पवित्रता तथा पाकी स्नान द्वारा होगी)

2- गन्दगी से पवित्रता तथा पाकी : सलात अदा करने वाले का शरीर,वस्त्र तथा कपड़ा और जिस स्थान पर वह सलात पढ़ना चाहता है सब का पाक तथा पवित्र होना अनिवार्य एवं आवश्य है ।

3-निय्यत : इसमें दो बातें है !

क- निय्यत में इख़लास(निय्यत में निःस्वार्थता):

मात्र अल्लाह के लिऐ सलात अदा करे लोगों के दिखावे के लिऐ नहीं ।

ख-हृदय में विशेष सलात का इरादह करे जैसे ज़ुहर, अस्र,वित्र आदि

❁ सावधान

क- निय्यत के बारे में शैतान कुछ मुसलमानों को सदेव वसवसे में ड़ाल देता है जबकि ऐक मोमिन (आस्तिक-विश्वासी)को शैतानी वसवसे में पड़ने से बचना चाहिये क्यों कि निय्यत एक असान चीज़ है तथ उसमे बिल्कुल किसी बनावट की कुछ भी आवश्यकता नहीं ,इसलिये कि हर वह आदमी जो जुमा की सलात के लिऐ मस्जिद में आया है उसका इरादह जुमा की सलात का है न कि इशा की सलात का इसी प्रकार जो भी मग़्रिब की सलात

के लिऐ आया है उसने मात्र मग़िरब की सलात का इरादह किया है न कि ज़ुहर या वित्र की सलात का ।

ख- निय्यत का स्थान ह्रदयं तथा दिल है तथा निय्यत को किसी शब्द से करना बिदअत है(शब्द से निय्यत का अर्थ है लोग जो कहते हैं कि मैं निय्यत करता हूँ फलाँ सलात पढ़ने की चार रकअत फलाँ इमाम के पीछे आदि)

4- सलात के समय का दाखिल होना : जिसने समय से पहले सलात पढ़ ली उसकी सलात सही नहीं हो गी तथा जिसने जान बूझ कर उस समय तक छोड़ दी यहाँ तक कि उस सलात का समय निकल गया तो उसने पहुत बड़ा पाप तथा अपराध किया ।

ज़ुहर का समय : सूर्य ढ़लने से लेकर उस समय तक है जब तक कि हर चीज़ का छाया ज़वाल के छाया के अतिरिक्त उसके बराबर हो जाये ।

अस्र का समय : ज़ुहर का समय समाप्त होने से सूर्य के पीला होने तक तथा सूर्य के पीला होने के समय से सूर्य डूब जाने तक भी अस्र का समय है प्रन्तु बिना किसी बाधा के उस समय तक अस्र को लेट करना मकरूह या हराम है ।

मग्रिब का समय : सूर्य डूब जाने के समय से ले कर आसमान में पच्छिम के ओर लाली समाप्त होने तक ।

इशा का समय : लालिमा तथा शफ़क के समाप्त होने से ले कर आधी रात तक ।

फ्ज्र का समय : सुबह सादिक़ (प्रत्यूष)से ले कर सूर्य उदय होने तक ।

5- क़िब्लह के ओर मुन्ह करना ।

6- सतर (गुप्तांग) ढ़कना ,आदमी का गुप्तांग नाभी से लेकर घुटने तक इसी प्रका अपने दोनों काँधे को ढ़कना भी अनिवार्य तथा वाजिब है । और महिला का पूरा शरीर गुप्तांग है उसे सलात में चेहरे के अतिरिक्त पूरे शरीर को ढ़ाकना अनिवार्य है,हाँ किसी ग़ैर मुहरिम(वह आदमी जिस से विवाह करना जायज़ है) के सामने हो तो महिला पूर्ण रूप अपने पूरे शरीर का परदा करे गी

सवधान : कब्रसतान एवं समाधिस्थल या ऐसी मस्जिद जहाँ सामधि एवं क़ब्र हो सलात पढ़ना जायज़ नहीं तथा अगर किसी ने समाधि में या ऐसी मस्जिद में जिस में समाधि है सालत पढ़ ली तो वह पापी होगा तथा उसकी सालत नहीं होगी ।

अज़ान तथा इक़ामत

1- आदमियों के लिए पाँचों सलातों में अज़ान तथा इक़ामत साबित है ।

2- सुन्नत का तरीका यह है कि अज़ान देने वाला क़िब्लह के ओर मुंह करके खड़ा हो और अपनी शहादत की उंगिलियो(अंगूठे के बग़ल वाली उंगली) को अपने दोनों कानों मे रखे तथा केवल ह़य्या अ़लस्सलाह़ और ह़य्या अ़ललफ़लाह़ में अपने दाहने तथा बायें ओर मात्र गर्दन मोड़े ।

3-अज़ान के शब्द यह हैं !

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ

حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ حَيَّ عَلَى الصَّلَاة

حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

अल्लाहुअक्बर, [अल्लाह सबसे बड़ा है]
अल्लाहुअक्बर, [अल्लाह सबसे बड़ा है]
अल्लाहुअक्बर, [अल्लाह सबसे बड़ा है]
अल्लाहुअक्बर, [अल्लाह सबसे बड़ा है]
अश्हदु अल्लाइहा इल्लल्लाह, [मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं]
अश्हदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाह, [मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं]
अश्हदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह,
[मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के संदेष्टा हैं]
अश्हदु अनन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह
[मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के संदेष्टा हैं]
हय्या अ़लस्सलाह, [आवो सलात के लिये]
हय्या अ़लस्सलाह, [आवो सलात के लिये]
हय्या अ़लल्फ़लाह, [आवो सफलता के लिये]
हय्या अ़लल्फ़लाह, [आवो सफलता के लिये]
अल्लाहुअक्बर, [अल्लाह सबसे बड़ा है]
अल्लाहुअक्बर, [अल्लाह सबसे बड़ा है]
लाइलाहा इल्लल्लाह[अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं]

फज्र की अज़ान में حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ **हय्या अलल्फ़लाह** के बाद

الصَّلَاةُ خَيْرٌ مِنَ النَّوْمِ **अस्सलातु खैरुम मिनन्नौम**[सलता नीद से बेहतर है]का शब्द बढ़ा दें गे

4- इक़ामत के शबद यह हैं ।

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ

حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ

حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ

قَدْ قَامَتْ الصَّلَاةُ قَدْ قَامَتْ الصَّلَاةُ

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

अल्लाहुअक्बर, [अल्लाह सबसे बड़ा है]

अल्लाहुअक्बर, [अल्लाह सबसे बड़ा है]

अश्हदु अल्लाइलाहाइल्लल्लाह,[मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह केअतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं]

अश्हदु अन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह,[मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के संदेष्टा हैं]
हय्या अ़लस्सलाह, [आवो सलात के लिये]
हय्या अ़ललफ़लाह, [आवो सफलता के लिये]
क़दक़ामतिस्सलाह , [निःसंदेह सलात खड़ी हो गई]
क़दक़ामतिस्साह, [निःसंदेह सलात खड़ी हो गई]
अल्लाहुअक्बर, [अल्लाह सबसे बड़ा है]
अल्लाहुअक्बर, [अल्लाह सबसे बड़ा है]
लाइलाहाइल्लल्लाह[अल्लाहकेअतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं]

5- अज़ान सुनने वाले के लिये निम्न काम सुन्नत हैं !
1- सुनने वाला वैसे ही कहे जेसे अज़ान देने वाला कहता है ,सिवाय حَيَّ عَلَى الصَّلَاة

हय्या अलस्सलाह तथा حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ हय्या अललफ़लाह के, इन शब्दों के उत्तर में لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ
[ला हवला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह कहे]।
2- जब अज़ान देने वाला
أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ

श्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह,अश्हदु अन्ना मुहम्मदन रसूलुल्लाह

कहे तो इसके बाद

رَضِيتُ بِاللَّهِ رَبًّا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُولًا وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا

रज़ीतु बिल्लाहि रब्बा व बिमुहममदिन रसूला व बिल्इस्लामि दीना[मैं अल्लाह से सहमत एवं प्रसन्न हूँ उसके रब तथा पलनहार होने में और इस्लाम से धर्म होने में और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से संदेष्टा होने म]

कहना सुन्नत है ।

3- अज़ान समाप्त होने के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजे ।

4- अज़ान के बाद यह दुआ पढ़ना सुन्नत है :

اللَّهُمَّ رَبَّ هَذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلَاةِ الْقَائِمَةِ آتِ مُحَمَّدًا الْوَسِيلَةَ وَالْفَضِيلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا

مَحْمُودًا الَّذِي وَعَدْتَهُ - صحيح البخاري - छ / टण© NO DISTRIB ALLOWED

अल्लाहुम्मा रब्बा हाज़िहिद्दअ़वतित ताम्मति वस्सलातिल क़ाइमति आति मुहम्मदनिल्वसीलता वल्फ़ज़ीलता वबअसहु मक़ाममम महमूदनिल्लती वअ़त्तह ।

अर्थ : [हे अल्लाह! इस पूरी पुकार(अज़ान)तथा माहाप्रलय तक स्थापित रहने वाली सलाह के रब तू मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वसीलह(स्वर्ग का उत्तम स्थान) तथा प्रमुखता एवं फ़ज़ीलत दे और उन्हें मकामे महमूद में पहुँचा जिसका तूने उन से वादा किया है]।

सफ़ बनाना(पंक्ति बनाना)

जमाअत के साथ पढ़ी जाने वाली सलात में सफों (पंक्तियों) को बराबर करना अनिवार्य तथा वाजिब है तथ सफ(पंक्ति) निम्न प्रकार बनाई जाये गी :

1- टखनों तथा कन्धों मे इस प्रकार बाबरी कि कोई किसी से आगे या पीछे न हो ।

2- सफ तथा पंक्ति को इस प्रकार गच करना कि एक आदमी तथा दूसरे आदमी के बीच शैतान के लिए स्थान न छूटे ।(क़दम को क़दम तथ कन्धे को कन्धे से मिला कर खड़ा होना चाहिये)

3- पहले पहली सफ़ को पूरा करना फिर दूसरी अतः दुसरी सफ़ बनाना उस समय तक आरंभ न करें जब तक कि पहली पूरी न हो जाये । इसी प्रकार प्रत्येक सफ़ एवं पंक्ति ।

4- सफों तथा पंक्तियों के बीच नज़दीकी : एक सफ़ से दूसरी सफ़ बहुत अधिक पीछे न हो,अतः इमाम पर

अनिवार्य तथा ज़रूरी है कि तक्बीर तहरीमह(सलात आरंभ करते समय जो पहली बार अल्लाहुअक्बर कहते है उसे तक्बीर तहरीमह कहते हैं क्यों कि उसके बाद हर वह काम जो पहले जायज़ था अब हराम तथा वर्जित होगया) से पहले सफ़ों के बराबर होने पर ज़ोर दे ।

सुतरह के अहकाम तथा आदेश

सुतरह उस ऊँची चीज़ को कहते हैं जो सलात पढ़ते समय आदमी अपने अगे रखता है उदाहरणस्वरूप दीवार खंबा आदि । सुतरह के अहकाम तथा आदेश निम्न प्रकार हैं ।

1- सलात पढ़ने वाला चाहे इमाम हो या अकेला उसके आगे सुतरह होना शास्त्रानुसार तथा धर्म से साबित है,और यह मुअक्कदह सुन्नत अर्थात ऐसी सुन्नत है जिस पर ज़ोर दिया गया है, बल्कि उलामा ने इसे अनिवार्य तथा वाजिब तक कहा है ।

2- सुतरह की लम्बाई ऐक हाथ की दो तिहाई से कम नहीं होनी चाहिये ।

3- सलात पढ़ने वाले के आगे से किसी का गुज़रना जायज़ नहीं ,हाँ सुतरह के पीछे से गुज़रना जायज़ है ।

4- सलात पढ़ने वाले के ऊपर अनिवार्य एवं वाजिब है कि अपने आगे से गुज़रने वाले को रोके चाहे वह बच्चह हो या पशु तथा जानवर ।

5-सलात पढ़ने वाला चाहे इमाम हो या अकेला उसके आगे से गुजरना ह़राम एवं वर्जित है.प्रन्तु सलात सही होगी ,हाँ अगर आगे से गुज़रने वाली चज़ि बालिग़ महिला या गदहा या काला कुत्ता हो तो सलात बातिल तथा भंग होजाये गी और फिर से पूरी सलात पढ़नी हगिी ।

6-ऊपर लिखे गये अह़काम एवं आदेश ह़रमपाक मक्कह तथा ह़रम पाक मदीनह में भी लागू होगा ,क्यों कि जब इन दोनों के अतिरिक्त स्थानों पर सलात पढ़ने वाले के आगे से गुज़रना वर्जित तथा ह़राम है तो ह़रम में तो ज़रूर ऐसा होगा ।रही वह ह़दीस जिसमें है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कअ़बा के पास सलात पढ़ रहे थे,आप के आगे सुतरह नहीं था तथा लोग आपके सामने से गुज़रते थे तो वह ह़दीस ज़ईफ़ है उससे दलील तथा तर्क लेना सही नहीं है ।

7- पिछले अह़काम तथा आदेश इमाम और अकेले सलात पढ़ने वाले के साथ खास है.किसी इमाम के पीछे

सलात पढ़ने वालों का सुतरह उसके इमाम का सुतरह है,इस लिये इमाम के पीछे सलात पढ़ने वाला सुतरह नहीं रखे गा और न ही अपने अगे से गुज़रने वाले को रोके गा । इमाम के पीछे सालत पढ़ने वालों के सफ़ों के बीच से गुज़रना जायज़ है,अगर उनके आगे से महिला या गदहा या काला कुत्ता भी गुज़रे तो उन की सलात सही होगी ।

सलात अदा करने का तरीक़ा एवं विधि

1-अपने दोनों हाथों को (रफऐ यदैन) कंधे के बराबर या कान की लुड़की तक उठाये तथा اللَّهُ أَكْبَرُ

अल्लाहुअक्बर कहे यह तकबीर तहरीमह है ।

सवधानः कुछ लोग तक्बीर तहरीमह के समय अपना अंगूठा अपने कान पर रखते हैं,यह बिल्कुल गलत है क्योंकि इस के बारेमें कोई सही दलील तथा सुबूत नहीं है ।

2- फिर अपने दाहने हाथ को बायें हाथ पर छाती पर रखे या बायें हाथ को अपने दाहने हाथ से छाती पर बकड़े ।

3- फिर सना की दुआ़ पढ़े,नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित सना की दुआ यह है ।

اللَّهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ اللَّهُمَّ نَقِّنِي مِنْ خَطَايَايَ كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الأَبْيَضُ مِنْ الدَّنَسِ اللَّهُمَّ اغْسِلْنِي مِنْ خَطَايَايَ بِالثَّلْجِ وَالْمَاءِ وَالْبَرَدِ

अल्लाहुम्मा बाइद बैनी व बैना खतायाया कमा बाअ़त्ता बैनल् मशरिक़ि वल्मग़्रिबि अल्लाहुम्मा नक़्क़िनी मिन खतायाया कमा युनक़्क़स्सौबुल अबयज़ु मिनद् दनसि, अल्लाहुम्मग़सिलनी मिन खतायाया बिल्माइ वस्सलजि वल्बरदि । अर्थ (ऐ अल्लाह मेरे तथा मेरी खताओं के बीच उतनी दूरी करदे जितनी दूरी पूरब तथा पच्छिम मे है । ऐ मेरे अल्लाह तू मुझे पापों से वैसे ही साफ करदे जैसे सुफेद कपड़ा मैल से साफ किया जाता है ।ऐ मेरे अल्लाह तू मुझे मेरी खताओं से पानी से बर्फ़ से ओले से धुल दे)

या यह दुआ़ पढ़े :

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ تَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ

सुबह़ानका अल्लाहुम्मा व बिह़मदिका व तबारकसमुका व तआ़ला जद्दुका व लाइलाहा ग़ैरुका (सह़ी मुस्लिम) अर्थः [ऐ मेरे अल्लाह मैं तेरी प्रशंसा एवं तारीफ़ के साथ तेरी पाकी तथा पवित्रता बयान करता हूँ,तेरा नाम बरकत वाला हैं,तेरा प्रतिष्ठा उत्तम है,तेरे अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं]।

सना की दुआ केवला पहली रकअ़त में पढ़ी जाये गी तथा यह सुन्नत है अगर कोई इसे न पढ़े तो कोई बात नहीं ।

4- फिर मरदूद एवं क्षुद्र शैतान से अल्लाह की पनाह एवं शरण माँगने के लिए यह पढ़े :

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ **अअूजु बिल्लाहि मिनश्शैता निर्रजीम**

[मै अल्लाह द्वारा मरदूद शैतान से पनाह चाहता हूँ] ।

और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह दुआ भी साबित है : أَعُوذُ بِاللَّهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنْ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ مِنْ هَمْزِهِ وَنَفْخِهِ وَنَفْثِهِ

अअूजु बिल्लाहिस्समीइल् अ़लीम मिनश्शैता निर्रजीम मिन हमज़िही व नफखिही व नफसिही ।

अर्थः [मैं अल्लाह जो सुनने वाला तथा जानने वाला है की मरदूद शैतान से पनाह लेता हूँ उसके वसवसों से,उसके घमंड़ से और उसके जादू से]

5- फिर بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम[मै अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो बड़ा दयालु तथा बड़ा कृपालु है]।

पढ़े फिर सूरह फ़ातिहा पढ़े ।

6- फिर कुर्आन पाक में से जो कुछ सूरतें या आयतें याद हो पढ़े ।

7-इमाम के पीछे सलात पढ़ने वालों पर इमाम की क़िरात सुनना अनिवार्य तथा वाजिब है,वह इमाम के साथ सूरह फातिह़ा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं पढ़ेगा ।

8-फिर(रफअ़ यदैन करे) दोनों हाथों को कंधे तक या कान की लौ तक इस प्रकार उठाए कि उँगलियों का भीतरी भाग क़िब्लह की ओर हो । तथा रुकू करते हुए अल्लाह हुअक्बर कहे ।

9- रुकू करते समय अपने दोनों हाथों को उँगलियों को फैला कर अपने दोनों घुटनों पर रखे तथा अपनी पीठ को रुकू में बराबर रखे ताकि उसकी पीठ कमान के प्रकार होने के बजए सीधी रहे ।

10- रुकू में यह दुआ़ तीन बार या इस से अधिक पढ़े :

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيم **सुबहाना रब्बियल अज़ीम**

(अर्थ : मैं अपने बड़े रब की पवित्रता बयान करता हूँ)

या سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ

सुबहान रब्बियल अ़ज़ीम व बिह़मदिही तीान बार या इस से अधिक पढ़े ।एक बार पढ़ना अनिवार्य तथा

वाजिब और एक से अधिक बार पढ़ना सुन्नत है, अतःरुकूअ में दूसरी दुआ पढ़ना भी साबित है ।

11- फिर रुकूअ से سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ **समिअ़ल्ला हुलिमन हमिदह**(अर्थ : अल्लाह पाक ने उसकी सुन ली जिसने उसकी प्रशंसा तथा तारीफ की)

कहते हुए उठे,और अपने दोनों हाथों को कंधों तक उठाए (रफ़अ यदैन करे) ।

12-फिर जब सीधा खड़ा हो जाये तो यह कहे

رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ

रब्बना व लकलहम्दु) या رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ **(रब्बना लकलहम्द)**

या(اللهم رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ **अल्लाहुम्मा रब्बना व लकलहम्द)**

या(اللهم رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ **अल्लाहुम्मा रब्बना लकलहम्द)** इस चार प्रकार से पढ़ना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित है ,अतः सलात पढ़ने वाला इनमें से जिसे चाहे पढ़े,रुकूअ से उठने के बाद यह दुआ पढ़ना अनिवार्य तथा ज़रूरी है इसके अतिरिक्त दुआयें पढ़ना सुन्नत है ,नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रुकूअ के बाद साबित दुआयें निम्न में लिखी जा रही हैं ।

क : رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ (صحيح البخاري)

रब्बना व लकलहम्द हम्दन कसीरन तय्इबन मुबारकन फीह(अर्थ : ऐ हमारे रब तेरे लिए पवित्र बरकत वाला तथा बहुत अधिक प्रशंसा तथा तारीफ़ है)

ख : اللهم رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمَوَاتِ وَمِلْءَ الْأَرْضِ وَمِلْءَ مَا بَيْنَهُمَا وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ (سنن الترمذي)

अल्लाहुम्मा रब्बना व लकल हम्दु मिलअस्समावाति व मिलअल्अरज़ि व मिलआ मा बैनहुमा व मिलआ शिअता मिन शैइन बअ़दु

(अर्थ : ऐ मेरे अल्लाह हमारे रब तेरे लिए आसमनों भर तथा ज़मीन भर और इनके अतिरिक्त जो तू चाहे उनके भर तेरे लिए प्रशंसा तथा तारीफ़ है)

ग :

رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ مِلْءُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمِلْءُ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ أَهْلَ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ أَحَقُّ مَا قَالَ الْعَبْدُ وَكُلُّنَا لَكَ عَبْدٌ اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ (صحيح مسلم -)

रब्बना व लकल हम्दु मिलअस्समावाति व मिलअल्अरज़ि व मिलआ मा शिअता मिन शैइन बअ़दु

अहलस्सनाइ वल्मजदि अहक़्क़ु मा क़ालल अ़ब्दु व कुल्लुना लका अ़ब्दुन, अल्लाहुम्मा ला मानिअ़ा लिमा अअ़तैता वला मुअ़तिया लिमा मनअ़ता वला यन्फ़अु ज़ाल्जद्दि मिन्कल जद्दु

अर्थ(ऐ हमारे रब तेरे ही लिऐ समस्त प्रशंसायें है आसमानों भर तथा ज़मीन भर तथा उस चीज़ भर जो तू उसके बाद चाहे,ऐ प्रशंसा तथा उपसान के लायक़,जो बन्दे तथा दास्य ने कहा उससे लायक़, हम सब तेरे ही बन्दे हैं,ऐ हमारे अल्लाह जिसे जो चीज़ तू देदे उसे कोई रोक नहीं सकता और जिसे तू न दे उसे कोई देने वाला नहीं है,तथा धनी को उसका धन तेरे प्रकोप से बचा नहीं सकती ।)

अत : सलात पढ़ने वाला इन में से कोई भी पढ़ सकता है तथा उचतम एवं अफ़ज़ल यह है कि जब अल्लाह के संदेष्टा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कई दुआऐं साबित हैं तो मुसलमानों को भी विभिन्न दुआएं पढ़नी चाहिये अतः कभी यह पढ़े तो कभी दूसरी ।

13- फिर सजदह के लिए झुकते हुए **अल्लाह हुअक्बर** कहे ।

14- अपने सात अंगों पर सजदह करे (दोनों हाथ,दोनों घुटने,दोनों क़दम,पेशानी तथा नाक)

अपने दोनों हाथों को दोनों कंधों के बराबर इसप्रकार रखे कि हथेली फैली हुई,उंगलियाँ सिमटी हुई क़िब्लह

के ओर हों तथा दोनों कुहनियाँ ज़मीन से उठाये रखे, और अपने दोनों बाज़ू को अपने दोनों बग़ल से दूर रखे अतः अपने दोनों क़दम (पंजे) खड़ा रखे तथा क़दम की उंगलियाँ क़िबलह की ओर हों ।

15- सजदह में यह दुआ पढ़े : سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى

सुब्हाना रब्बियल अअ़ला,, [मैं अपने पालनहार की पवित्रता बयान करता हूँ] तीन बार या इस से अधिक या

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى وَبِحَمْدِهِ

सुब्हाना रब्बियल अअ़ला व बिहमदिही ,, अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अन्य दूसरी दुआ़ऐ भी आई है ।

16- फिर दोनों सजदों के बीच बैठने के लिए सजदह से सिर उठाते हुये **अल्लाहुअक्बर** कहे (अरबी भाषा में इस बैठक को जलसह कहते हैं)

17- फिर अपने बायें पैर को बिछा कर उस पर बैठ जाये तथा अपने दाहने पैर की उंगलियों को क़िबलह की ओर करके उसे खड़ा कर ले ।

18- दोनों सजदों की बीच वाली बैठक में यह दुआ पढ़े : رَبِّ اغْفِرْ لِي

रब्बिग़ फ़िर ली या यह पढ़े :

رَبِّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَاجْبُرْنِي وَاهْدِنِي وَارْزُقْنِي

रब्बिग़ फ़िरली वरहमनी वजबुरनी वहदिनी वरज़क़नी ,

अर्थ : [ऐ अल्लाह मुझ को क्षमा करदे तथा मुझ पर दया कर और मेरे हानि पूरे करदे तथा मुझे हिदायत दे और मुझे रोज़ी एवं जीविका प्रदान कर] ।

19-फिर اللهُ أَكْبَرُ **अल्लाह हुअकबर** कहते हुये दोबारह सजदह करे तथा इसी प्रकार वह अपनी बाकी सलात मे करे ।

20- जब दूसरी रकअ़त पढ़ चुके तो पहले तशह्हुद के लिये वैसे बैठे जैसा इस से पहला बताया जा चुका है तथा अपनी दाहनी हथेली को अपनी रान या दाहने घुटने पर रखे और दाहनी हथेली की सारी उंगलियाँ समेट ले तथा शहादत की उंगली(अगूँठे के बगल वाली उंगली) से इशारह करे । या कानी उंगली तथा उसके बगल वाली उंगली को समेट ले और बीच वाली तथा अगूँठे के बीच गोलाई बनाये और शहादत की उंगली से इशारह करे ।तशह्हुद में अपनी निगाह शहादत की

उंगली पर रखे तथा अपनी बाँई हथेली अपनी जाँघ या बायें घुटने पर रखे फिर तशहहुद की दुआ पढ़े ।

التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ والصَّلَوَاتُ و الطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अलैका अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुह, अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इबादिल्लाहिस्सालिहीन, अशहदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अबदुहू व रसूलुह

अर्थ :- (सारी प्रशंसा तथा सलातें और सब पवित्रतायें मात्र अल्लाह के लिए हैं, ऐ नबी आप पर सलाम ,अल्लाह की दया तथा उसकी अधिकता हो,क्षमा हो हम पर तथा अल्लाह के नेक दासियों एवं भक्तों पर,मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजने के योग्य नहीं है,तथा मैं गवाही देता हूँ कि निःसंदेह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बन्दे तथा उसके संदेष्टा और रसूल हैं ।)

फिर اللَّهُ أَكْبَرُ **अल्लाहुअकबर** कहते हुये तीसरी रकअ़त के लिए खड़ा हो तथा रफअ़यदैन करे ।

21- फिर जब अन्तिम रकअ़त पढ़ चुके तो अन्तिम तशहहुद के लिये इस प्रकार बैठे !अपने दाहने कदम को खड़ा करे तथा अपने बायें कदम को अपनी दाहनी पिंड़ली के नीचे करे और बायें चट्टे को ज़मीन पर रखे और अपने हाथ को वैसे ही रखे जैसा कि ऊपर पहले तशहहुद में बीत चुका है ।

22-जब सलात दो रकअ़त वाली हो जैसे फज्र तथा नफ़ल तो तशहहुद के लिये उस प्रकार बैठे गा जैसे दोनों सजदों के बीच बैठा जाता है ।

23- फिर अत्तहिय्यात तथा नबी पर दरूद पढ़े गा । अत्तहिय्यात ऊपर बीत चुका है । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद पढ़ने के शब्द यह हैं :

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ

अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला मुहम्मद व अ़ला आलि मुहम्मद कमा सल्लैता अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नका हमीदुम् मजीद ,अल्लाहुम्मा बारिक अ़ला मुहम्मद व अ़ला अलि मुहम्मद कमा

बारकता अ़ला इब्राहीम व अ़ला अलि इब्रहीम इन्नका हमीदुम्मजीद.

अर्थः (ऐ मेरे अल्लाह दया भेज मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा उनके समस्त संतानों पर जैसा तूने इब्राहीम अलैहिस्सलाम तथा उनके संतानों पर दया भेजी निःसंदेह तू प्रशंसा के योग्य और उत्तम वाला है,ऐ मेरे अल्लाह तू अधिक्ता तथा बरकत भेज मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा उनके समस्त संतानों पर जैसा तूने इब्राहीम अलैहिस्सलाम तथा उनके संतानों पर अधिकता भेजा , निःसंदेह तू प्रशंसा के योग्य और उत्तम वाला है)

फिर चार चीज़ों से अल्लाह से पनाह माँगे पनाह माँगने की दुआ यह हैः

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ مِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ

अल्लाहुम्मा इन्नी अअूज़ु बिका मिन अ़ज़ाबिल क़ब्रि व मिन फितनतिल महया वलममाति व मिन शर्रि फितनतिल मसीहिद्दज्जाल ।

अर्थः ऐ मेरे अल्लाह निःसंदेह मैं नर्क के प्रकोप,क़ब्र के अज़ाब तथा जीवन और मृत्यु के फितने तथा दज्जाल की बुराई से पनाह चाहता हूँ ।

फिर इनके बाद जो चाहे दुआ करे ।

24- फिर अपने दाहने ओर सलाम फेरेते हुये **अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाह** कहे फिर इसी प्रकार अपने बायें ओर सलाम फेरते हुये **अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाह** कहे ।

सलात में निम्न कार्य वर्जित तथा मना है

1- लोगों के साथ बात चीत करना ।

2- इधर उधर देखना ।

3- खाना पीना ।

4- आकाश तथा आसमान की ओर निगाह उठाना ।

5- कमर पर हाथ रखना ।

6- बिना ज़रूरत हिलना डुलना ।

7- अपने दोनों पैर बिछा कर चूतड़ पर बैठना ।

8- सजदह के बीच अपने दोनों बाज़ुओं को ज़मीन से चिमटा देना ।

9- उंगलियों को चटखाना ।

10- दोनों आँखों को बन्द करना ।

11- पेशाब या पाखाना को ज़बरदसती रोकना ।

फर्ज़ तथा अनिवार्य सलात के बाद की दुआयें ।

۞ फर्ज़ सालत के बाद निम्न दुआ़ये पढ़ना सुन्नत है।

1- तीन बार أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ **अस्तग़फ़िरुल्लाह** कहना।

अर्थ : मैं अल्लाह से क्षमादान तथा बखशिश माँगता हूँ।

2- اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

अल्लाहुम्मा अन्तस्सलाम व मिन्कस्सलाम,तबारक्ता या ज़लजलालि वल इक्राम।

अर्थ : ऐ मेरे अल्लाह तू सलामती तथा कल्याण वाला है तथा तुझी से सलामती है,ऐ बज़ुरगी तथा बखशिश वाले तू बरकत तथा अधिक्ता वाला है।

3- لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَلَا نَعْبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ

लाइल हा इल्लल्लाहु वहदहू लाशरीका लहू, लहुल्मुल्कु व लहुल्हम्दु वहुवा अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर,ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाह वला नअ़बुदु इल्ला इय्याहु,लहुन्निअ़मतु वलहुल्फ़ज़्लु

वलहुस्सनाउल्हसन,ला इलाहा इल्लल्लाहु मुखलिसीना लहुद्दीन, वलव करिहल्काफ़िरून , अललाहुम्मा ला मानिआ लिमा अअ़तैता वला मुअ़तिया लिमा मनअ़ता वला यन्फ़अु ज़ल्जद्दि मिन्कलजद्दु ।

अर्थः अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं,उसका कोई भागीदार तथा मिश्र नहीं,उसी के लिये सारी प्रशंसा तथा हर प्रकार की बादशाहत है, और वह हर चीज़ पर शक्तिमान है ।पापों से दूर रहना तथा उपासना करने पर ताक़त मात्र अल्लाह की तौफ़ीक़ तथा दैवयोग से है ,अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं तथा हम मात्र उसी की उपासन करते हैं , वही प्रत्यक नेअ़मत तथा सुखसामग्री का मालिक और उसी के लिये हर प्रकार की अच्छी प्रशंसा है ,अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के लायक नहीं,हम उस के लिये धर्म को खालिस करने वाले हैं चाहे काफिर लोग अप्रसन्न ही क्यों नहीं,ऐ मेरे अल्लाह जिसे तू दे उसे कोई रोकने वाला नहीं,जिसे तू न दे उसे कोई देने वाला नहीं, तथा किसी धनवान को उसका धन तेरे अ़ज़ाब तथा प्रकोप से बचा नहीं सकता ।

4- फज्र और मग़्रिब सलात के बाद पिछली दुआ़ओं के साथ यह भी पढ़े !

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

लाइलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू लहुल्मुल्कु वलहुल् हम्दु युहई व युमीतु वहुवा अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर (दस बार)

अर्थ : अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं,वह अकेला है,उसका कोई भागीदार नहीं ,उसी के लिये हर प्रकार की प्रशंसा तथा हर प्रकार की बादशाहत है,वही जीवन तथा मृत्यु देता है और वह हर चीज़ पर शक्तिमान है।

5-फिर इसके बाद

33 बार سُبْحَانَ اللَّهِ

सुबहानल्लाह(अर्थ :मैं अल्लाह की पवित्रता बयान करता हूँ),

33बार اَلْحَمْدُ لِلَّهِ **अल्हमदुलिल्लाह**(अर्थ : हर प्रकार की प्रशंसा मात्र अल्लाह के लिये है),

33 बार اللَّهُ أَكْبَرُ **अल्लाहुअक्बर**(अर्थ : अल्लाह सब से बड़ा है,तथा सौ को पूरा करने के लिये एक बार

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

,लाइलाहा इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीका लहू,लहुल मुल्कु व लहुल् ह्म्दु वहुवा अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर कहे ।

6- फिर आयतलकुर्सी पढ़े

چڈ ۀ ہ ۀ ہ ہ ۂ ۂ ھ ھ ھ ۓ ے ے ۓ ۓ ڭ ڭ ڭ ڭ ۇ
ۇۆ ۆ ۈ ۈ ۇ ۋ ۋ وو ۉ ۉ ې ې ېې □ □ □ □ □ □
□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □
ى ى ې چ البقرة: ٢٥٥

अर्थ : अल्लाह तआला ही सत्य पूज्य है,जिसके सिवाये कोई अराध्य नहीं, जो जीवित है ,एवं सबका सहायक आधार है, जिसे न ऊँघ आये न निद्रा उसी के अधीनी धरती तथा आकाश की सभी चीज़ें हैं. कौन है,जो उसकी आज्ञा के बिना उसके सामाने शिफ़ारिश कर सके, वह जानता है जो उसके सामने है,जो उसके पीछे हैं। और वह उसके ज्ञान में से किसी चीज़ का घेरा नहीं कर सकते, परन्तु वह जितना चाहे । उसकी कुर्सी की परिधि ने धरती तथा आकाश को घेरे रखा है । वह अल्लाह तआ़ला उनकी सुरक्षा से न धकता है और न ऊबता है । वह तो बहुत महान तथा बहुत बड़ा है ।

7-फिर قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ **कुलहुवल्लाहु अह्द**) और

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ **कुल अऊ़ज़ु बिरबिलफ़लक़**)और

(وَقُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ) **कुल अऊजु बिरबिन्नास**)पूरी पूरी सूरत पढ़े और फज्र तथा मग़्रिब की सलात के बाद तीन तीन बार पढ़ना अफज़ल तथा उच्तम है ।

सजदह सहव(सलात में कोई सुन्नत या वाजिब भूल जाने पर सजदह)

1-सजदह सहव सलात के अन्त में दो सजदों का नाम है चाहे सलाम फेरने से पहले या बाद, अगर सजदह सहव सलाम के बाद हो तो दोनों सजदों के बाद दूसरी बार सलाम फेरे गा और दोनों सजदों में वही दुआ़ पढ़े गा जो सलात के सजदों में पढ़ता है ।

2- सजदह सहव तीन कारण से की जाती है : (ज्यादती या कमी या शंका)जबकि ज़्यादती या कमी भूल चूक से हो.हाँ अगर कोई जान बुझ कर ऐसा करे तो उसकी सलात बातिल तथा नष्ट हो जाये गी ।

۞ कमी का उदाहरण : कमी का अर्थ केवल वाजिबात एवं अनिवार्य की कमी जैसे पहले तशहहुद का छूट जाना,एक दिशा से दूसरे दिशा में जाने के लिए तक्बीर

में कमी या रुकू तथा सजदह में तसबीह वाली दुआ़ओं का भूल कर न पढ़ना।

۞शंका का उदाहरणः किसी को शंका हो कि उसने तीन रकअ़त बढ़ी है या चार।

हाँ अगर किसी ने सलात के अरकान एवं आधार में से कोई रुक्न या आधार छोड़ दिया(जैसे सजदह,रुकू या एक पूरी रकअ़त)तो उसे एक संपूर्ण मुकम्मल रकअ़त पढ़ कर फिर सजदह सहव करना होगा।

3-सजदह सहव कब सलाम से पहले तथा कब सलाम के बाद है ?

अगर सजदह सहव ज्यादती के कारण हो तो सलाम के बाद तथा कमी के कारण हो तो सलाम से पहले करे गा और अगर सजदह सहव शंका के कारण हो तो सत्य खोजे और अपने अधिपति गुमान पर अमल करके सलाम के बाद सजदह सहव करे और अगर उसे कुछ भी गुमान तथा अनुमान न हो तो उसे जिस पर अधिक विश्वास हो वही करे यानी कम पर विश्वास करके सालम से पहले सजदह सहव करे। जैसे शंका हुवा कि तीन रकअ़त पढ़ी है या चार और सत्य की खोज के बाद भी अधिपति गुमान में कुछ नहीं आया

तो तीन रकअ़त मान कर एक और पढ़ ले और सलाम से पहले सजदह सहव करले ।

❁ कुछ ऐसे उदाहरण जिसे बहुत लोग कर ड़ालते हैं ।

❁ एक आदमी जो सलात में पहला तशह्हुद भूल गया अब अगर पूरा खड़ा होने से पहले याद आजाये तो वह तशह्हुद के लिए बैठ जाये और उस पर सजदह सहव नहीं है प्रन्तु जब वह पूरा खड़ा होचुका हो तो तशह्हुद के लिये नहीं लौटे गा बल्कि अपनी सलात पढ़ता रहे गा तथा सलाम से पहले सजदह सहव कर लेगा क्यों कि उसने सलात में कमी की है ।

❁ एक आदमी जो जुहर की सलात में भूल कर पाँचवीं रकअ़त के लिए खड़ा होगया फिर उसे याद आया कि वह पाँचवीं रकअ़त है तो उसे तशह्हुद के लिए बैठ जाना चाहिये और पाँचवीं रकअ़त पूरी नहीं करनी चाहिये क्यो कि वह ज़्यादह है । उसपर अपनी सलात में ज़्यदती करने के कारण सलाम के बाद सजदह सहव अनिवार्य तथा वाजिब है ।

❁ एक आदमी जिसने अस्र की सलात में भूल कर तीन रकअ़त पढ़ी और उसे सलाम के बाद याद आया तो

इस दिशा में उसे चौथी रकअ़त पढ़नी होगी और वह सलाम के बाद सजदह सहव करेगा क्यो कि उसने तीसरी रकअ़त के बाद तशहहुद और सलाम ज़्यादा किया ।

सलात में क़स्र तथा जमा(इकट्ठा करके सलात पढ़ने) का बयान

1- क़स्र कहते हैं चार रकअ़त वाली सलात (ज़ुहर, अस्र,इशा)को केवल दो रकअ़त पढ़ना,यह केवल सफर एवं यात्रा में जायज़ है तथा यात्री के लिये पूरा पढ़ने से अफ़ज़ल तथा उच्तम क़स्र है ।

2-निम्न स्थितियों तथा सालतों में ज़ुहर और अस्र के बीच और मग़्रिब तथा इशा के बीच उन दोनों में से किसी एक के समय जमा करना (इकट्ठा करके सलात पढ़ना)जायज़ है ।

क : सफर तथा यात्राः

ख : ऐसी तेज़ वर्षा जिसके कारण लोगों का मस्जिद तक आना कठिन हो ।

ग : ऐसी बीमारी एवं रोग कि अगर रोगी दो सलात को इकट्ठा करके न पढ़े तो बहुत कठिनाई हो ।

3- दो सलातों को इकट्ठा करने की हालत में एक अज़ान तथा हर सलात के लिये अलग अलग इक़ामत होगी ।

जुमा की सलात

1- जुमा सलात की केवल दो रकअ़त है,इन दोनों में इमाम ऊँची आवाज़ से क़िराअत करेगा अर्थात सूरह फातिहह और कोई सूरत ज़ोर से पढ़े गा ।सुन्नत यह है कि पहली रकअ़त में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह अअ़ला तथा दूसरी रकअ़त में सूरह ग़ाशियह या पहली में सूरह जुमा और दूसरी में सूरह मुनाफ़िक़ून पढ़ा जाये ।

2- जुमा के सही होने के लिए उस से पहले दो खुतबे देना शर्त है और इमाम के पीछे पढ़ने वालों पर ध्यान से सुनना वाजिब तथा अनिवार्य है,इमाम के खुतबा एवं भाषण देते समय बात चीत करना वर्जित तथा हराम है ।

3- जुमा सलात से पहले कुछ काम करना सुन्नत है : स्नान एवं ग़सुल करना,अच्छा कपड़ा पहनना,खुशबू लगाना,मस्जिद में पहले आना,मस्जिद तक पैदल चल कर आना ।

4-जुमा के दिन सूरह कहफ़ की तिलावत तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अधिक से अधिक दरूद पढ़ना सुन्नत है ।

5- जब लोग पंकित एवं सफ बना के बैठे हों तो फलाँग कर आगे जाना जायज़ नहीं, हाँ अगर पंक्तिों तथा सफों के बीच खाली स्थान है तो उन में चल कर आगे जाया जा सकता है ।

6- जुमा की सलात केवल पुरुषों एवं आदिमियों पर अनिवार्य एवं वाजिब है,महिलाओं पर नहीं । हाँ अगर महिला जुमा की सलात पढ़ ले तो काफी होगा वरना उसके ऊपर ज़ुहर की चार रकअ़त पढ़ना वाजिब ताथा अनिवार्य है ।

7- अगर कोई अदमी इमाम के खुतबह एवं भाषण देते समय मस्जिद में आये तो वह हलकी दो रकअ़त पढ़ कर ही बैठे ।

8- अगर किसी आदमी से जुमा की रकअ़त में से कोई रकअ़त छूट जाये तो इमाम के सलाम के बाद पुनः छूटी हुई रकअ़त पढ़ना उस पर वाजिब है और जिसकी दोनों रकअ़तें छूट जायें जैसे कोई आदमी मस्जिद में उस समय आया जबकि इमाम दूसरी रकअ़त के सजदह में

था तो उस पर इमाम के सलाम फेरने के बाद चार रकअ़त पढ़ना अनिवार्य एवं वाजिब है ।
9- अगर किसी की जुमा की सलात छूट जाये तो वह जुहर की चार रकअ़त पढ़े गा,उसी से उसके जुमा की पुड़ती तथा क़ज़ा हो जाये गी ।

दोनों ईद की सलात

1- दोनों ईद की सलात ईदुल् फ़ित्र(मीठी ईद) तथा ईदुल् अज़हा (बड़ी ईद) में साबित है ।
2- ईद की सलात का समय : सूर्य उदय होने तथा थोड़ा उपर चढ़ने से(सूर्य उदय होने के लगभग 15 मिनट बाद से) लेकर सूर्य के ढ़लने से थोड़ा पहले तक,(जुहर सलात का समय आरंभ होने से लगभग 10 मिनट पहले तक)।
3- दोनों ईद की सलात के लिए न ही अज़ान है और न ही इक़ाम । तथा ईद की सलात मात्र दो रकअ़त है , पहली रकअ़त में सात तक्बीर(सात बार अल्लाहु अक्बर कहना) और दूसरी रकअ़त मे पाँच तक्बीर ।
4-ईद की सलात में इमाम ऊँची आवाज़ से क़िरात करे गा,सुन्नत यह है कि पहली रकअ़त में सूरह फ़ातिहा के

बाद सूरह अअ़ला और दूसरी में सूरह ग़ाशियह या पहली में सूरह क़ाफ और दूसरी में सूरह क़मर पढ़ा जाये ।

5-सलात के बाद इमाम खुतबह एवं भाषण दे गा ।

6-ईद के खुतबह के लिए बैठना तथा ध्यानपूर्वक सुनना सुन्नत है अनिवार्य एवं वाजिब नहीं ।

इसतिस्क़ा की सलात(वर्षा के लिये सलात)

1-वर्षा तथा बारिश माँगने के लिये इसतिस्क़ा की सलात पढ़ना सुन्नत है,विशेष रूप से जब धरती सूखा से दोचार हो ।

2- इसतिस्क़ा की सलात का समय तथा पढ़ने की विधि एवं तरीका बिल्कुल ईद की सलात के प्रकार है ।

3- पहले इमाम सलात पढ़ाये गा फिर मिम्बर पर चढ़ कर एक खुतबह तथा भाषण दे गा और खुतबह देते समय अपने दोनों हाथों को उठा कर वर्षा होने की दुआ़ तथा प्रार्थना करे गा ।

4- फिर अपनी चादर पलटे गा तथा अपने दोनों हाथों को उठाये हुए क़िबला के ओर मुन्ह करे गा और अल्लाह पाक से वर्षा करने की दुआ़ करे गा, इमाम के

जैसा सारे मौजूद लोग अपने हाथ उठा कर दुआ़एं करें गे तथा चादर पलटैं गे ।

5- इमाम सलात से पहले खुतबह तथा भाषण दे सकता है ।

गरहन की सलात

1- गरहन : सूर्य या चंद्र के किसी भाग या पूरे भाग की प्रकाश के मध्धिम होजाने या छिप जाने को सूर्य गरहन कहते हैं, चंद्र गरहन उस समय होता है जब चंद्र चौंधहवी का हो तथा सूर्य गरहन महीने के अन्त में होता है जब चंद्र ग़ायब होजाता है ।

2- सूर्य तथा चंद्र गरहन अल्लाह की चिन्ह तथा निशानी में से एक निशानी है जिनके द्वारा अल्लाह तआ़ला अपने दासियों और बन्दों को ड़ेराता है ताकि यह उनके लिये पाप छोड़ने तथा अल्लाह के ओर पलटने का कारण बने अतः गरहन देखने के बाद गरहन की सालत(सलाते कुसूफ) अदा करनी चाहिये ।

3- गरहन की सलात के लिये अस्सलातु जामिअ़तुन (सलात खड़ी होने वाली है) कह कर लोगों को बुलाया जाये गा ।

4-गरहन की सलात की केवल दो रकअ़त है ,हर रकअ़त में दो क़ियाम दो रुकू तथा दो सजदे हैं,इमाम सूरह फ़ातिहा के बाद ज़ोर से किसी बड़ी सूरत की तिलावत करेगा फिर देर तक रुकू में रहे गा और रुकू से सिर उठाने के बाद **समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह रब्बना लकलहम्द** कहेगा फिर सूरह फ़ातिहा और पहले से थोड़ी छोटी सूरत पढ़े गा फिर रुकू भी पहले से थोड़ा कम लमबा करे गा तथा रुकू से सिर उठाने के बाद दो लमबे सजदे करेगा, इसके बाद इसी प्रकार दूसरी रकअ़त भी पढ़ेगा हाँ दूसरी रकअ़त पहली की तरह अधिक लमबी न होगी (बल्कि पहली से कम लमबी होगी)

5- सलात के बाद इमाम का खुतबह तथा भाषण देना और लोगों को जागरुक तथा नसीहत करना सुन्नत है ।

जनाज़ह की सलात

(मृतक एवं मय्यित अगर पुरुष एवं आदमी है तो इमाम उसके छाती के सामने खड़ा होगा और अगर महिला है तो उसके बीच में खड़ा होगा)

1-जनाज़ह की सलात पढ़ने का संक्षिप्त एवं मुख्तसर तरीका यह है कि खड़े होकर चार बार اَللّٰهُ أَكْبَرُ अल्लाहु अक्बर कहे फिर सलाम फेर दे ।

2- पहली बार اَللّٰهُ أَكْبَرُ **अल्लाहु अक्बर**कह कर अपने दोनों हाथों को कंधे तक या कान तक उठाए तथा उन्हें अपने सीने पर रखे और सूरह फ़ातिहा पढ़े,सूरह फ़ातहा के साथ कोई अन्य सूरह मिलान सुन्नत है ।

3- फिर दोबारह اَللّٰهُ أَكْبَرُ **अल्लाहु अक्बर** कह कर दरूद शरीफ़ पढ़े दरूद इब्राहीमी पढ़ना अफ़ज़ल है ।

4- फिर तीसरी बार اَللّٰهُ أَكْبَرُ **अल्लाहु अक्बर** कह कर मृतक एवं मय्यित के लिए बखशिश तथा दया और रहमत की दुआ करे और बहुत ही इखलास के साथ दुआ करे , नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित दुआऐं करना अफ़ज़ल है हम निम्न में वह दुआ लिख रहे हैं !

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيرِنَا وَكَبِيرِنَا وَذَكَرِنَا وَأُنْثَانَا اللَّهُمَّ مَنْ أَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَأَحْيِهِ عَلَى الْإِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلَى الْإِيمَانِ اللَّهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا أَجْرَهُ وَلَا تُضِلَّنَا بَعْدَهُ

अल्लाहुम्मग़ फ़िर लिहृय्यिना व मय्यितिना ,व शाहिदिना व ग़ाइबिना व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़करिना व उन्साना अल्लाहुम्मा मन अहृययतहू मिन्ना फअहृइही अ़लल इस्लाम व मन तवफ़्फैतहू मिन्ना फ़तवफ़्फहू अ़लल ईमान, अल्लाहुम्मा ला तहृरिमना अजरहू वला तुज़िल्लना बादहू ।

अर्थ : ऐ मेरे अल्लाह! हमारे जिन्दह तथा मुरदह,मौजूद तथा ग़ाइब,हमारे छोटे और बड़ै,हमारे मरद और ओरत को बखश दे,हे मेरे अल्लाह हम में जिसको जीवित रख उसको इस्लाम पर जीवित रख तथा हम में जिसको मृत्यु दे उसको ईमान पर मृत्यु दे, ऐ मेरे अल्लाह उसके फल से हमें निराश न कर और न ही उसके बाद हमें पथभ्रष्ट तथा गुमराह कर ।

5- اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ وَعَافِهِ وَاعْفُ عَنْهُ وَأَكْرِمْ نُزُلَهُ وَوَسِّعْ مُدْخَلَهُ وَاغْسِلْهُ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَنَقِّهِ مِنْ الْخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الْأَبْيَضَ مِنْ الدَّنَسِ وَأَبْدِلْهُ دَارًا

خَيْرًا مِنْ دَارِهِ وَأَهْلًا خَيْرًا مِنْ أَهْلِهِ وَزَوْجًا خَيْرًا مِنْ زَوْجِهِ وَأَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ وَأَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ أَوْ مِنْ عَذَابِ النَّارِ

अल्लाहुम्मग़ फ़िर लहू वरहमहू वआफ़िही वअ़फु अन्हु व अक्रिम नुज़ुलहू व वस्सिअ़ मुदखलहू वग़सिलहु बिल्माइ वस्सलजि वल्बरदि व नक़्क़ही मिनल खताया कमा युनक़्क़स्सौबुल अबयज़ु मिनद्दनसि व अबदिलहु दारन खैरन मिन दारिही व अहलन खैरन मिन अहलिही व ज़ौजन खैरन मिन ज़ौजिही व अदखिलहु अल्जन्नत व अइज़हु मिन अ़ज़ाबिल् क़ब्रि व मिन अज़ाबिन्नारि

अर्थ : ऐ मेरे अल्लाह तू उसे क्षमा करदे तथा उस पर दया कर और उसे क्षमा दे ,उसका ठिकाना अच्छा बना, उसकी समाधी तथा क़बर को कुशादह तथा विशाल करदे तथा उसके पाप को जल,बरफ और ओले से धुल दे और उसे पापों से ऐसे ही पवित्र और पाक करदे जैसे सुफ़ेद कपड़ा साफ़ किया जाता हे,तथा उसको उसके संसार के घर से अच्छा घर और उसके अहल तथा सनतान से अच्छा अहल और उसकी पत्नी से अच्छी पत्नी दे तथा उसे स्वर्ग में दाखिल कर और क़ब्र तथा नर्क के प्रकोप और अज़ाब से बचा ।

5- फिर चौथी बार **अल्लाह हुअक्बर** कह कर अपने दाऐं और सलाम फेरदे ।

नफ़्ली सलात के मसायल

सुनन रवातिब

1- सुनन रवातिब(वह सुन्नतें जो अनिवार्य सलातों के पहले या बाद में हैं) 12 रकअ़त हैं। दो रकअ़त फज्र से पहले,चार रकअ़त ज़ुहर से पहले तथा दो रकअ़त ज़ुहर के बाद,दो रकअ़त मग़्रिब के बाद,तथा दो रकअ़त इशा के बाद।

2- सुनन रवातिब मस्जिद के बजाये घर में पढ़ना अधिक सर्वोत्तम एवं ज़्यादह अफ़्ज़ल है।

3- छूटी हुई सुनन रवातिब का क़ज़ा एवं पुणती करना जायज़ है।

4- यात्री के लिये सुनन रवातिब न पढ़ना सुन्नत है सिवाये फ़ज्र की सुन्नत के(इनके अतिरिक्त जो अन्य नफ़्लें है तो उन्हें यात्री पढ़ सकता है)

5- जुमा की सलात के बाद दो रकअ़त या चार रकअ़तें पढ़ना सुन्नत है।

तहज्जुद तथा वित्र की सलात

1- तहज्जुद तथा वित्र की सलात का समय इशा की सलात के बाद से लेकर फज्र उदय होने तक है।

2-तहज्जुद की सलात का तरीका : दो दो रकअ़त अर्थात प्रत्यक दो रकअ़त के बाद सलाम फेर दे फिर अन्त में वित्र पढ़े। वित्र की रकअ़त कम से कम एक है और अधिक से अधिक 11 रकअ़त है ,नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अधिक्तर वित्र में तीन रकअ़त पढ़ते थे,पहली रकअ़त में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह अअ़ला,दूसरी में सूरह काफ़िरून,फिर दो रकअ़त के बाद सलाम फेरदेते(इन दोनों रकअ़तों को शफ़अ (जोड़ा)कहते हैं फिर एक रकअ़त पढ़ते और उस में सूरह फ़ातिहा के बाद सूरह इख्लास पढ़ते।

3- सुन्नत यह है कि तहज्जुद की कुल रकअ़तें वित्र के साथ 11 से अधिक न की जायें(जैसा कि सही बुखारी व मस्लि में आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का बयान है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान तथा रमज़ान के अलावह 11 रकअ़त से अधिक नहीं पढ़ते थे)

प्रन्तु अगर कोई नफ़ल समझ कर अधिक पढ़े तो कोई बात नहीं है।

4- वित्र की सलात में कुनूत करना तथा कभी छोड़ देना सुन्नत है , कुनूत रुकू से पहले है अतः रुकू के बाद भी सही है।

5- वित्र की क़ुनूत में यह दुआ पढ़ना सुन्नत है :

اللَّهُمَّ اهْدِنِي فِيمَنْ هَدَيْتَ وَعَافِنِي فِيمَنْ عَافَيْتَ وَتَوَلَّنِي فِيمَنْ تَوَلَّيْتَ وَبَارِكْ لِي فِيمَا أَعْطَيْتَ وَقِنِي شَرَّ مَا قَضَيْتَ إِنَّكَ تَقْضِي وَلَا يُقْضَى عَلَيْكَ وَإِنَّهُ لَا يَذِلُّ مَنْ وَالَيْتَ وَلَا يَعِزُّ مَنْ عَادَيْتَ تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ

अल्लाहुम्महदिनी फ़ीमन हदैत व आफ़िनी फ़ीमन आफैत वतवल्लनी फ़ीमन तवल्लैत व बारिकली फ़ीमा अअ़तैत व क़िनी शर्रमा क़ज़ैत इन्नका तक़ज़ी वला युक़ज़ा अलैक, इन्नहू ला यज़िल्लु मन वालैत व ला यइज़्ज़ु मन आदेत तबारकता रब्बना वताआलैत ।

अर्थ : हे मेरे अल्लाह मुझे हिदायत दे उन लोगों की टोलियों मे जिन्हें तूने हिदायत दी और मुझे क्षमा में रख उनलोगों की टोली में जिन्हें तूने क्षमा दिया है और मेरा काम बना उन लोगों में जिनका तूने काम बनाया है तथा बरकत दे मेरे लिये उस चीज़ में जो मुझे तूने दिया है और मुझे उस चीज़ की बुराई से बचा जो तूने मेरे लिये लिखा है क्यों कि तू जो चाहे आदेश देता है तथा तुझ पर किसीका आदेश नहीं चलता निःसंदेह जिसे तू मित्र रखे वह बेइज़्ज़त नहीं हो सकता तथा जिस से तू दुशमनी रखे वह इज़्ज़त नहीं पा सकता,ऐ हमारे पालनहार तू बरकत वाला तथा बलन्द है ।

अतः इस दुआ के अतिरिक्त दूसरी दुआऐं करने में या दूसरी दुआ जोड़ लेने में कोई बात नहीं है ।

6- एक रात में दो वित्र पढ़ना जायज़ नहीं ।
7- वित्र रात की आखिरी सलात होनी चाहिये,अगर इनके बाद जोड़ा करके कोई पढ़े तो कोई बात नहीं । (जोड़ा का अर्थ दो रकअ़त ऐक साथ)
8- तहज्जुद तथा वित्र की सलात घर में अफ़ज़ल है हाँ रमज़ान के महीने में मस्जिद में जमाअ़त के साथ अदा करना अफ़ज़ल है ईसी को तरावीह़ की सलात कहते हैं ।
9- वित्र की सलात सुन्नत मुअक्कदह है इसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने न यात्रा तथा सफर में छोड़ा है और न बिना सफर में इस लिये हर मोमिन को चाहिये कि इसमें बिल्कुल कोताही न करे ।

चाश्त की सलात

1-चाश्त की सलात दो रकअ़त या इस से अधिक है, हर दो रकअ़त के बाद सलाम फेरा जाये गा, यह उन सुन्नतों में से है जिस के करने पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उभारा है ।
2- चाश्त की सलात का समय सुर्य उदय होने के लगभग 15 मिनट बाद से ले कर ज़ुहर के समय आरंभ होने से 10 मिनट पहले तक ।

इसतिखारह की सलात

जब मोमिन किसी काम का इरादह करे जैसे यात्रा, घर खरीदना, कोई नोकरी करना, कोई तिजारत करना विवाह तथा शादी.तलाक़ आदि. तो इसके लिए दो रकअ़त सलात पढ़ना तथा वह दुआ़ करना जो आप ने अपने साथियों को सिखाया है साबित है जैसा कि जाबिर बिन अबदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने साथियों को उन के सारे कामों में वैसे ही इसतिखारह सिखाते थे जैसे उन्हें कुर्आन की सूरतें सिखाते थे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते कि जब तुम में से कोई किसी काम का इरादह करे तो चाहिये कि वह फ़र्ज़ के सिवाय दो रकअ़त सलात पढ़े फिर कहे :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ بِعِلْمِكَ وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا أَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ وَأَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ اللَّهُمَّ فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ هَذَا الْأَمْرَ

फिर خَيْرًا لِي فِي عَاجِلِ أَمْرِي وَآجِلِهِ उसका नाम ले या कहे فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي فَاقْدُرْهُ لِي وَيَسِّرْهُ لِي ثُمَّ بَارِكْ لِي فِيهِ اللَّهُمَّ وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّهُ شَرٌّ

لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي या कहे فِي عَاجِلِ أَمْرِي وَآجِلِهِ فَاصْرِفْنِي عَنْهُ وَاقْدُرْ لِي الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ رَضِّنِي بِهِ

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्तखीरुका बिइलमिका व असतक़दिरुका बिक़ुदरतिका व असअलुका मिन फ़ज़लिकल अज़ीम फ़इन्नका तक़दिरु वला अक़दिरु व तअ़लमु वला अअ़लमु व अन्ता अ़ल्लामुल ग़ुयूब अल्लाहुम्मा इन कुन्ता तअ़लमु अन्ना हाज़ा(फिर उस काम का नाम ले)**ख़ैरुन ली फ़ी आ़जिलि अमरी व आजिलिही** (या कहे)**फ़ी दीनी व मआ़शी व अ़क़िबति अमरी फक़्दुरहु ली व यस्सिरहु ली सुम्मा बारिक ली फ़ीह, अल्लाहुम्मा इन कुन्ता तअ़लमु अन्नहू शर्रुन ली फी दीनी व मआ़शी व अ़क़िबति अमरी(या कहे)फी अ़जिलि अमरी व आजिलिही फसरिफनी अन्हु वक़्दुर ली अलखैरा हैसु कान सुम्मा रज़्जिनी बिही ।**

अर्थः हे मेरे अल्लाह मैं तुझ से इस काम में तेरे ज्ञान की सहायता से अच्छाई माँगताहूँ तथा तेरी क़ुदरत के वासते से(भलाई पाने के लिये)तुझसे क़ुदरत माँगता हूँ क्यों कि तू (हर चीज़ पर)शक्तिमान है तथा मै(किसी चीज़ पर)शक्तिमान नहीं और तू (ग़ैब,अन्देख) जानता है और मैं ग़ैब नहीं जानता तथा तू गुप्त पातों को अच्छे प्रकार जानने वाला है,ऐ मेरे अल्लाह अगर तू जानता है कि यह

काम (जिसका में इरादह किया हूँ)मेरे लिये इस संसार में या उस संसार में या मेरे धर्म तथा जीवन में और मेरे फल में बेहतर है तो इस कार्य को मेरे लिये उपलब्ध करदे तथा उसे मेरे लिये सरल और आसान करदे,फिर उसमें मेरे लिये बरकत दे ,और अगर तू जानता है कि यह कार्य (जिसका में इरादह किया हूँ) मेरे धर्म,जीवन और मेरे फल में या इस संसार में या उस संसार में मेरे लिये बुरा है तो उसको मुझ से फेर दे तथा मुझ को उससे फेरदे और मेरे लिये भलाई जहां कहीं भी हो उपलब्ध करदे,फिर उससे प्रसन्न करदे ।(सही बुख़ारी)

विभिन्न सुन्नतें

❁मस्जिद में दाखिल होने के बाद दो रकअ़त पढ़े बिना नहीं बैठना चाहिये जैसा कि नबी सल्लल्लाहय अलैहि वसल्लम ने आज्ञा दिया है (इन दोनो रकअ़तों का नाम तहिय्यतुल मस्जिद है)

❁ वुज़ू के बाद दो रकअ़त पढ़ना सुन्नत है ।

❁ अज़ान तथा इक़ामत के बीच दो रकअ़त पढ़ना सुन्नत है ।

❁ उपासना तथा इबादत के लिये एक नियम एवं दसतूर ।

उपासना तथा इबादत में असल रुकावट है यहाँ तक कि शास्त्रानुसार एवं शरीअ़त से कोई तर्क तथा दलील हो ।

जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है : जिसने मेरे इस धर्म में कोई ऐसी चीज़ गढ़ी जो इस में से नहीं है तो वह बिदअ़त है । (बुखारी व मुस्लिम) और एक दूसरी हदीस में है कि : जिसने कोई ऐसा अमल किया जिस पर हमारा अ़मल नहीं है तो वह मरदूद तथा क्षुद्र है ।

इसलिये अगर किसी ने फज्र की सलात में एक रकअ़त बढ़ा दिया तथा उसे तीन रकअ़त या चार रकअ़त जान बूझ कर सवाब तथा भलाई की निय्यत से किया तो यह काम बिदअ़त है और उसकी सलात बरबाद होजाये गी । आज कल अधिकतर लोग अज्ञानता तथा नाजानकारी के कारण तहारत एवं पवित्रता तथा सलात में बहुत सारी बिदअ़तों में डूबे हुये हैं जिनमें से कुछ यह हैं !

❁ सलात या वुज़ू से पहले ज़बान से कुछ कह कर निय्यत करना ।

❁ सालत के बाद या हज्ज के तलबियह में एक आवाज़ के साथ एक ही लय में इकट्ठा कई लोगों का दुआ़ करना ।

❁ वुज़ू मे गरदन पर मसह़ करना ।

❁ ईद मीलाद नबी(नबी का जन्म दिन) मनाना ।

❁ ईद मेअ़राज मनाना ।

अगर ऊपर के कामों में हमारे लिये कुछ भी भलाई होती तो हमसे पहले उसे अल्लाह के संदेष्टा तथा आप के बाद आप के सच्चे साथी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम करते तथा हर वह आदमी जिसे अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत है उसके लिये अनिवार्य तथा वाजिब है कि अपने नबी के मार्ग को अपनाये और अल्लाह के धर्म में बिदअ़त ना गढ़े ।

निम्न बातों की जानकारी प्रत्यक मुसलमान पर अनिवार्य तथा वाजिब है ।

❁पहली बात : सबसे बड़ी बात जो हर भारग्रस्त एवं मुकल्लफ़ आदमी पर अनिवार्य है वह यह कि वह मात्र एक अल्लाह की उपासना तथा इबादत करे जिका कोई भागीदार नहीं । अल्लाह तआ़ला ने फरमाया है : मैं ने जिन्नातों तथा मनुष्यिों को मात्र अपनी उपासना तथा इबादत के लिये पैदा किया है ।(सूरह ज़ारियात : 65)

और फरमाया : निः संदेह हमने हर उम्मत में रसूल भेजे (ताकि वे कहें) कि तुम लोग मात्र अल्लाह की इबादत तथा उपासना करो और तागूत से बचो ।(सूरह नहलः36

(अल्लाह के अतिरिक्त जिस चीज़ की भी उपासना तथा इबादत की जाये वो तागूत है चाहे वह वली की समाधी और क़ब्र हो या पत्थर और पेड़ आदि)
और फरमायाःतुम लोग अल्लाह की इबादत करो,उसके साथ कुछ भी भागीदार न करो।(सूरह निसा :36)
और जिसने इबादत के सारे भागों में से किसी भी भाग को अल्लाह के अतिरिक्त के लिये किया तो उसने शिर्क किया, अल्लाह ने फरमाया है : अल्लाह इस चीज को बिल्कुल नहीं छमा करे गा कि उसके साथ शिर्क तथा भागीदार बनाया जाये और उसके अतिरिक्त जिसे चाहे गा क्षमा करदे गा ।सूरह निसा48-
और फरमाया : शिर्क बहुत बड़ा जुलम तथा अत्याचार है । सूरह लुक़मानः13-

शिर्क के दो भाग हैं :

पहला भागः बड़ा शिर्क (यह इस्लाम धर्म से बाहर कर देने वाला है)बड़े शिर्क के कुछ उदाहरण निम्न में दिये जारहे हैं ।

1- अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को पुकारना,जैसे कोई किसी नबी की समाधी तथा क़ब्र के पास जाये या किसी नेक आदमी की क़ब्र के पास जाये और कहे कि

आप मेरे लिये सिफ़ारिश करें या मेरे रोगी तथा बीमार को स्वास्थ तथा शिफ़ा दें आदि ।

2- अल्लाह के अलावह के लिये उनके नाम पर बलिदान एवं ज़बह करना,जैसे जिन्नात या शैतान के लिये कोई पशु का बलिदान देना एवं ज़बह करना या नबियों तथा वलियों के लिये उनकी समाधी तथा क़ब्र पर ज़बह करना ।

3- अल्लाह के सिवा के लिये तवाफ तथा परिकरमा करना ,जैसे क़ब्रों के चारों ओर तवाफ करना ।

4- अल्लाह के ओर से अवतारित आदेश के सिवा फ़ैसिला करना ।

5- गरदन,हाथ,,बच्चों पर या गाड़ी में तावीज़ तथा गन्ड़ा लटकाना और यह आस्था तथा अक़ीदह रखना कि यह तावीज़ लाभ हुँचाते हैं या हानि दूर करते हैं ।

6- जादू

दूसरा भाग : छोटा शिर्क(बहुत बड़ा पाप है प्रन्तु इससे धर्म से बाहर नहीं होगा)इसकी कुछ भाग यह हैं :

1- रिया तथा दिखावा - नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया :मुझे तुम लोगों पर जिसका सबसे

बड़ा खतरा है वह छोटा शिर्क है,अतः इसके विषय में आप से पूछा गया तो आप ने फरमाया रिया तथा दिखावा ।मुस्नद अहमद.

2- अल्लाह के सिवा की क़सम(शपथ) खाना जैसे नबी की क़सम,मेरे जीवन,मेरे पिता,मेरी इज़्ज़त तथा सम्मान की क़सम आदि, उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया है कि : जिसने अल्लाह के अतिरिक्त की क़सम खाई तो उसने कुफ्र तथा नास्तिकता किया या शिर्क एवं अनेकेश्वरवाद किया । (अबूदाऊद,हदीस सही है)

3- यह कहन कि जो अल्लाह चाहे तथा फ़लाँ चाहे हुज़ैफ़ह रज़ियल्ला अन्हु ने बयान किया है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया है कि :एक आदमी ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा जो अल्लाह चाहे और आप चाहें ,तो आप ने कहाः क्या तूने मुझे अल्लाह का भागीदार बना दिया बल्कि जो अकेला अल्लाह चाहे ।(मुस्नद अहमद)

❁ दूसरी बात : **उपासना तथा इबादत के सही होने के लिये तीन शर्तें है :**

1-इस्लाम : अतः (विमुस्लिम)ग़ैर मुस्लिम जैसे यहूदी, नसरानी अदि की इबादत तथा उपासना सही नहीं ।

2-इख़लास एवं निःवार्थता : अगर किसी ने इबादत में शिर्क किया,बड़ा शिर्क या छोटा जैसे दिखावा तो उसकी इबादत बातिल तथा नष्ट होगी ।

3-नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का आज्ञापलन ः अतः अगर किसी ने छटी सलात बढ़ा दी या ज़ुहर की पाँच रकअ़त पढ़ी तो उसका यह काम बिदअ़त है इसके कारण यह पापी होगा तथा उसकी सलात नष्ट होगी चाहे वह अपनी निय्यत मे मुख़लिस एवं विश्वासपात्र ही क्यों न हो या उसका इरादा अधिक सवाब एवं पुन्न प्राप्त करना ही क्यों न हो क्योंकि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का आदेश है कि : जिसने कोई ऐसा कार्य किया जिस पर हमारा आदेश नहीं है तो वह नष्ट है (सही मुस्लिम)

तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत की चाहत भी यही है की उनके समस्त आदेशों में उनकी आज्ञापालन करैं और उनकी हर दी हुई सूचना की तसदीक़ तथा पुष्टि करैं और उनकी रोकी हुई चीज़ों से बचें तथा उनकी हर बात तथा कामों की पैरवी करैं ।

❁तीसरी बात : इस समय बहुत सी ऐसी चीज़ें फैली हुई हैं जिनसे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सावधान किया है :

अतः हे मेरे मुस्लिम भाइयो ! उन चीज़ो से आप बचें तथा उनसे आप सदेव सावधान रहें हम निम्न में उन में से कुछ लिख रहे हैं :

1- सलात एवं नमाज़ को उसके पहले समय से देर करके पढ़ने से बचो क्योंकि यह इस्लाम में बड़े पापों में से बहुत बड़ा पाप है ।

2- मस्जिद में जमाअ़त के साथ सलात पढ़ना ामत छोड़ो विषेश रूप से फज्र तथा अस्र ।

3- तांत्रक एवं शुअ़बदह बाज़ो तथा जादूगरों के पास जाने से बचो ।

4- ऐसे तबर्रुक एवं परसाद से बचो जो धर्म में साबित नहीं है जैसे नबियों या बुज़ुरगों की क़ब्रों से या कअ़बा के ग़िलाफ तथा उसकी इमारतों से तबर्रुक प्राप्त करना ।

5- दारू,शराद तथा प्रत्यक नशा लाने वाली चीज़ों के प्रयोग करने से बचो ।

6- हराम तथा नाजायज़ रूप से धन कमाने से बचो जैसे सूद,बियाज,चोरी,खरीदने बेचने में धोका देना,नाप तौल में कमी आदि ।

7- ज़ना तथा ज़ना(व्यभिचार)तक लेजाने वाली चीज़ों जैसे औरतों को देखने तथा उनसे मेलजोल रखने से बचो ।

8- माता पिता का अवज्ञा एवं नाफरमानी तथा नाते दारी काटने से बचो ।

9- ज़बान की बुरायों जैसे झूट,ग़ीबत तथा चाई चुग़ली करने से बचो ।

10- हे मुसलमान महिला ! अजनबियों के सामने छिपाने वाली चीज़ों में से कुछ भी खोलने से बच जैसे चेहरा,बाल,दोनों हथेली,दोनों पैर, आदि बिना नक़ाब के निकलने से बच तथा पूरे शरीर को छिपाने वाला नक़ाब तथा बुरक़ा पहना कर ।

मैं अल्लाह पाक से प्रार्थना एवं दुआ करता हूँ कि वह इस पुस्तक में बरकत दे तथा हमें लाभ देने वाला ज्ञान तथा नेक कार्य करने का अवसर दे ।

وصلى الله على نبينا محمد وعلى آله وصحبه ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين

विषय सूची	محتويات الكتاب
न.शीर्षक पृष्ठ सं	م. الموضوع الصفحة